बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ

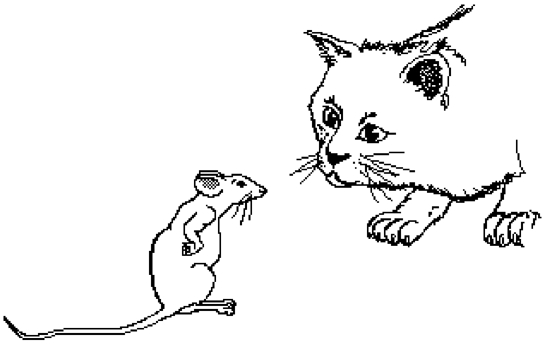

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Billa Aur Chuhiya Jaisi Kahaniyan (Cat and Rat Like Stories)
Cover Page picture : Cat and Rat
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ 7

1 बिल्ला और चुहिया 9

2 बबून का फैसला 12

3 बुढ़िया और उसका सूअर 16

4 मूनाचर और मानाचर 23

5 मूराचुग और मीनाचुग 31

6 मुर्गा और चूहा 41

7 नाक कटी चिड़िया 45

8 सैक्सटन की नाक 52

9 पत्नी और उसकी बैरीज़ की झाड़ी 59

10 नैनी जो खाना खाने घर नहीं जाती 66

11 पिटिड्डा 79

12 गोसो मास्टर जी 85

13 बन्दर की पूँछ अभी भी क्यों 96

14 खरगोश ने अपनी पूँछ कैसे खोयी 102

15 टिड्डा और चींटा 108

16 एक चिड़िया और एक झाड़ी 116

17 एक चिड़िया और एक कौआ 121

18 मक्का का दाना 126

19 जिगर 131

20 बात 136

21 बबून का फैसला 144

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000**, तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

---

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ

क्या कहा चूहे बिल्ली की कहानी। अरे चूहे बिल्ली की कहानियाँ तो हमने बहुत सुनी हैं। चूहा दौड़ बिल्ली आयी बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे आदि आदि। इसमें ऐसी क्या खास बात है जो हम यह कहानी पढ़ें। बच्चों यह वह वाली या उस जैसी कोई कहानी नहीं है बल्कि यह एक नये तरीके की कहानी है। तुम इसे पढ़ोगे तो हँसोगे कि ये कैसी कहानियाँ हैं।

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक है "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इन कहानियों में कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं की जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।

इस तरह की कहानी के दूसरे पहलू में जब काम करने वाला काम नहीं करता तो काम कराने वाला उसको दूसरे से नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता है पर वह इसलिये मना कर देता है क्योंकि उसने तो उसका कोई नुकसान नहीं किया होता। यह कड़ी भी चलती ही जाती है और अन्त में वह अपना काम करवाने में सफल हो जाता है।

ये सब कहानियाँ 5–6 साल तक के बच्चों के लिये बहुत अच्छी हैं जिनमें बच्चे कारण और उसके परिणाम का सम्बन्ध सीखते हैं। ऐसी कहानियाँ कई देशों में कही सुनी जाती हैं और वे सब एक जैसी ही लगती हैं। तो लो पढ़ो कहानियाँ "एक कहानी कई रंग"[2] की सीरीज़ की यह पहली कड़ी।

अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं।

---

[2] "One Story Many Colors-1" – Cat and Rat Like Stories

1 बिल्ला और चुहिया[3]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह पुस्तक हम बिल्ला और चुहिया की कहानी से ही करते हैं। यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश की कहानियों से ली गयी है और वहाँ की एक बहुत ही लोकप्रिय मशहूर और पुरानी कहानी है।

एक बिल्ला और एक चुहिया खेलते थे घर में
फिर वे अनाजघर में खेलने लगे जब तक चुहिया को चोट नहीं लग गयी....

खेलते खेलते बिल्ले ने चुहिया की पूँछ काट ली तो चुहिया बोली — "देखो मिस्टर बिल्ले, मेरी पूँछ वापस कर दो नहीं तो हाँ... । तुम्हारी यह बात ठीक नहीं है।"

पर बिल्ला बोला — "नहीं, मैं तुम्हारी पूँछ तुमको वापस नहीं करूँगा जब तक कि तुम गाय के पास नहीं जाओगी और मेरे पीने के लिये उसका दूध ले कर नहीं आओगी।"

सो वह कूदी और भागी भागी गाय के पास पहुँची और बोली — "ओ गाय, मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा दूध दो ताकि उसको मैं बिल्ले को पीने को दे सकूँ और वह मुझे मेरी पूँछ मुझे वापस करदे।"

---

[3] The Cat and the Mouse - a folktale from England, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=107
Collected and retold by Mike Lockett

गाय बोली — "चुहिया रानी, मैं तुमको दूध तब तक नहीं दूँगी जब तक कि तुम मुझे किसान के पास से कुछ भूसा ला कर नहीं दोगी।"

तुरन्त वह कूदी और भागी भागी किसान के पास पहुँची और बोली — "ओ किसान ओ किसान, मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा भूसा दो ताकि मैं उसको गाय को खिला सकूँ। फिर गाय मुझको बिल्ले के लिये दूध देगी और मैं बिल्ले से अपनी पूँछ वापस ले सकूँगी।"

किसान बोला — "नहीं चुहिया रानी, मैं तुमको भूसा नहीं दूँगा जब तक कि तुम मुझे कसाई से माँस ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया फिर कूदी और भागी भागी एक कसाई के पास पहुँची और बोली — "कसाई कसाई, तुम मुझे थोड़ा सा माँस दो। यह माँस ले जा कर मैं किसान को दूँगी। किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा मैं गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और फिर बिल्ला मेरी पूँछ मुझे वापस कर देगा।"

कसाई बोला — "मैं तुमको माँस तब तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुझे बेकर[4] से डबल रोटी ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया एक बार फिर कूदी और भागी भागी एक बेकर के पास पहुँची और बोली — "ओ बेकर, मुझे डबल रोटी दो। यह

[4] Baker is he who bakes the bread and cakes etc.

डबल रोटी मैं कसाई को दूँगी। कसाई मुझे माँस देगा। वह माँस ले जा कर मैं किसान को दूँगी।

किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा मैं गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और फिर बिल्ला मेरी पूँछ मुझे वापस कर देगा।"

बेकर बोला — "मैं तुमको डबल रोटी एक शर्त पर दे सकता हूँ कि तुम यहाँ फिर कभी नहीं आओगी और मेरी बेक की हुई चीज़ें कभी नहीं खाओगी और मेरे खरीदने वालों को भी कभी नहीं डराओगी।"

चुहिया ने बेकर से वायदा किया कि वह अब उसकी दूकान पर कभी नहीं आयेगी। न कभी उसकी बेक की हुई चीज़ों को खायेगी और न ही उसके खरीदारों को डरायेगी।

सो बेकर ने उसको डबल रोटी दे दी। डबल रोटी ले कर चुहिया भाग गयी। भागी भागी वह कसाई के पास गयी और उसको उसने डबल रोटी दी।

कसाई ने उसको माँस दिया। माँस ले कर वह किसान के पास गयी तो किसान ने उसको भूसा दिया।

भूसा ले कर वह गाय के पास गयी तो गाय ने उसको दूध दिया। उस दूध को ले कर वह बिल्ले के पास गयी। तब उस बिल्ले ने उसकी पूँछ वापस की।

इस तरह चुहिया ने अपनी पूँछ वापस पायी।

2 बबून का फैसला[5]

हालाँकि इस सीरीज़ की पुस्तकों में हमें यह कहानी सबसे पहले देनी चाहिये थी पर जैसा कि हमने पहले ही कहा था कि इन पुस्तकों की पहली कहानी वही दी गयी है जिस तरह की कहानियाँ जिस पुस्तक में दी गयी हैं जैसे इस पुस्तक में "बिल्ला और चुहिया" की कहानी सबसे पहले दी गयी है।

पर यह कहानी जो हमने दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाओं से ली है और इस तरह की कहानियों की मूल कहानी है जो यह बताती है कि इन नीचे लिखी हुई कहानियों में जो होता है वह क्यों होता है और इसी तरह से क्यों होता है जैसे कि हाथी पानी क्यों पीता है या फिर आग पानी को क्यों बुझाती है आदि आदि।

इसी लिये इस कहानी को हम और दूसरी कहानियों से पहले दे रहे हैं। तो लो पढ़ो इन कहानियों के कामों की मूल कथा।

एक दिन की बात है कि कुछ ऐसा हुआ कि —

एक बार एक चूहे ने एक दरजी के कपड़े फाड़ डाले तो दरजी एक बबून के पास गया और उससे बोला — "मैं तेरे पास इसलिये आया हूँ क्योंकि चूहे ने मेरे कपड़े फाड़ दिये हैं। पर वह कहता है

[5] The Judgment of Baboon – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft34.htm

कि उसको यह बात मालूम नहीं है और वह बिल्ली को इसका दोषी ठहराता है।

इसी तरह से बिल्ली भी अपने आपको निर्दोष ठहराती है और कहती है कि यह काम कुत्ते ने किया होगा। कुत्ता कहता है कि यह उसका काम नहीं है लकड़ी ने यह काम किया होगा।

लकड़ी आग को दोषी ठहराती है। आग का कहना है कि यह काम उसने नहीं किया बल्कि पानी ने किया होगा। पानी का कहना कि यह काम हाथी ने किया होगा और हाथी कहता है कि यह काम चींटी का है।

इस तरह उन सबमें आपस में झगड़ा हो रहा है। मैं दर्जी तुझसे यह कहने आया हूँ कि तू उन सबको इकट्ठा कर और पता लगा कि यह काम किसका है ताकि मुझे सन्तोष मिल सके।"

जब दरजी ने यह सब बबून से कहा तो उसने सब जानवरों को इकट्ठा किया तो उन्होंने उससे भी वही सब कहा जो उन्होंने दरजी से कहा था। हर जानवर एक दूसरे को दोषी बता रहा था।

सो बबून को उनको सजा देने का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखायी दिया सिवाय इसके कि वे आपस में एक दूसरे को ही सजा दे दें।

सो उसने सबसे पहले चूहे से कहा — "चूहे दरजी को सन्तोष दो।"

चूहे ने कहा कि उसकी कोई गलती नहीं है फिर भी बबून ने बिल्ली से कहा कि वह चूहे को काट ले। बिल्ली ने चूहे को काट लिया।

फिर उसने वही सवाल बिल्ली से पूछा और जब उसने कहा कि यह काम उसका नहीं था तो बबून ने कुत्ते को बुला कर कहा कि वह बिल्ली को काट ले।

इस तरह से बबून ने सभी जानवरों को बुलाया और एक के बाद एक सभी से वही सवाल किया पर सभी ने यही कहा कि वे नहीं जानते कि यह किसने किया था। तब उसने उन सबसे कहा —

लकड़ी तुम कुत्ते को मारो
आग तुम लकड़ी को जलाओ
पानी तुम आग को बुझाओ
हाथी तुम पानी पियो
चींटी तुम हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटो

उन्होंने सबने ऐसा ही किया और उस दिन के बाद से वे कभी एक दूसरे के साथ मिल कर नहीं बैठते।

चींटी हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटती है
हाथी पानी पी जाता है
पानी आग बुझा देती है
आग लकड़ी खा जाती है
लकड़ी कुत्ते को मारती है
कुत्ता बिल्ली को काटता है
बिल्ली चूहा खाती है

इस फैसले से दर्जी को बहुत सन्तोष मिला और वह बबून से बोला — “बबून अब मैं सन्तुष्ट हूँ। और अब क्योंकि मुझे सन्तोष मिल गया है इसके लिये मैं तुझे दिल से धन्यवाद देता हूँ। तूने मेरे साथ न्याय किया है तूने मुझे नया कपड़ा दिया है।”

बबून बोला — “आज से मेरा नाम जैन[6] नहीं होगा मेरा नाम बबून होगा।”

उस दिन से बबून अपने चारों हाथों पैरों पर चलता है शायद इसलिये कि उसने उस दिन अपना यह बेवकूफी भरा फैसला सुनाया था तो उसका दो पैरों पर चलने का फायदा उससे छीन लिया गया।

[6] Jan

3 बुढ़िया और उसका सूअर[7]

बिल्ला और चूहे जैसी कहानियों की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक बुढ़िया अपना घर साफ कर रही थी कि उसको छह पैन्स का एक टेढ़ा मेढ़ा सिक्का[8] मिला।

उसने सोचा "मैं इस छोटे से छह पैन्स का क्या करूँ। ठीक है, मैं बाज़ार जाती हूँ और इसका एक छोटा सा सूअर खरीद कर लाती हूँ।"

सो वह बाजार गयी और उसने छह पैन्स का एक छोटा सा सूअर खरीद लिया। जब वह घर लौट रही थी तो वह एक छोटी सी सीढ़ी के पास आयी जिसको उनको चढ़ कर पार करना था और अपने घर पहुँचना था पर वह सूअर उस सीढ़ी पर चढ़ ही नहीं रहा था।

---

[7] The Old Woman and Her Pig - a folktale from England, Europe.
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type2030.html
Translated by DL Ashliman. Ashliman has taken it from "English Fairy Tale" by Joseph Jacobs.
This story is based on a "Mother-Goose" poem.

[8] The sixpence (6d), sometimes known as a tanner or sixpenny bit, was a coin worth 1/40th of a pound sterling, or six pence. It was first minted in the reign of Edward VI and was circulated until 1980. Following decimalisation in 1970 it had a value of 2½ new pence. The coin was made from silver from its introduction in 1551 to 1947, and thereafter in cupronickel.

वह थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसको एक कुत्ता मिला। उसने कुत्ते से कहा — "ओ कुत्ते, जा कर तू सूअर को काट ले। सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।" पर कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा सो वह घर नहीं जा सकी।

बुढ़िया थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसको एक डंडा मिला। उसने डंडे से कहा — "ओ डंडे, तू जा कर कुत्ते को मार क्योंकि कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर डंडे ने उस कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ा सो वह बुढ़िया अपने घर नहीं जा सकी।

बुढ़िया थोड़ा और आगे बढ़ी तो वहाँ उसको आग मिली। उसने आग से कहा — "ओ आग, जा तू जा कर डंडे का जला क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर आग ने डंडे को नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा सो वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

बुढ़िया थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसको पानी मिला। उसने पानी से कहा — "ओ पानी, तू जा कर आग को बुझा क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर पानी ने आग को नहीं बुझाया, आग ने डंडे का नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा सो वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

बुढ़िया थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसको एक बैल मिला। उसने बैल से कहा — "ओ बैल, तू जा और जा कर पानी को पी ले क्योंकि पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर बैल ने पानी नहीं पिया, पानी ने आग को नहीं बुझाया, आग ने डंडे को नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा और इस तरह वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

बुढ़िया थोड़ा और आगे बढ़ी तो उसको एक कसाई मिला। उसने कसाई से कहा — "ओ कसाई, आ कसाई तू जा कर बैल को

मार दे क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर कसाई ने बैल को नहीं मारा, बैल ने पानी नहीं पिया, पानी ने आग को नहीं बुझाया, आग ने डंडे का नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा और इस तरह वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

कुछ दूर और आगे जाने पर बुढ़िया को एक रस्सी मिली। उसने रस्सी से कहा — "ओ रस्सी, तू जा कर कसाई को फाँसी लगा दे क्योंकि कसाई बैल को नहीं मारता, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर रस्सी ने कसाई को फाँसी नहीं लगायी, कसाई ने बैल को नहीं मारा, बैल ने पानी नहीं पिया, पानी ने आग को नहीं बुझाया, आग ने डंडे का नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा और इस तरह वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

कुछ दूर और आगे जाने पर बुढ़िया को एक चूहा मिला। बुढ़िया ने उस चूहे से कहा — "ओ चूहे, तू जा कर रस्सी को कुतर ले क्योंकि रस्सी कसाई को फॉसी नहीं लगाती, कसाई बैल को नहीं मारता, बैल पानी नहीं पीता।

पानी आग को नहीं बुझाती, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

पर चूहे ने रस्सी नहीं कुतरी, रस्सी ने कसाई को फॉसी नहीं लगायी, कसाई ने बैल को नहीं मारा, बैल ने पानी नहीं पिया।

पानी ने आग को नहीं बुझाया, आग ने डंडे का नहीं जलाया, डंडे ने कुत्ते को नहीं मारा, कुत्ते ने सूअर को नहीं काटा, सूअर सीढ़ी पर नहीं चढ़ा और इस तरह वह बुढ़िया घर नहीं जा सकी।

कुछ दूर और आगे जाने पर बुढ़िया को एक बिल्ला मिला। बुढ़िया ने उस बिल्ले से कहा — "ओ बिल्ले, तू जा कर चूहे को खा ले क्योंकि चूहा रस्सी नहीं कुतरता, रस्सी कसाई को फॉसी नहीं लगाती, कसाई बैल को नहीं मारता, बैल पानी नहीं पीता।

पानी आग को नहीं बुझाती, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता सूअर को नहीं काटता, सूअर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ता और मैं सूअर के बिना घर नहीं जा सकती।"

इस पर बिल्ला बोला — "अगर तुम मुझे दूर खड़ी उस गाय का थोड़ा सा दूध ला दो तो मैं चूहे को खा जाऊँगा।"

सो वह बुढ़िया गाय के पास गयी और उससे थोड़ा सा दूध माँगा तो गाय बोली — "अगर तुम मुझे उस दूर पड़े भूसे के ढेर से थोड़ा सा भूसा ला दोगी तो मैं तुमको दूध दे दूँगी।"

बुढ़िया ने गाय को उस भूसे के ढेर से थोड़ा सा भूसा ला दिया।

गाय ने भूसा खा कर दूध दिया।

बुढ़िया ने दूध ले जा कर बिल्ले को पिलाया।

बिल्ला चूहे को खाने दौड़ा।

चूहा रस्सी कुतरने को दौड़ा।

रस्सी कसाई को फाँसी लगाने को दौड़ी।

रस्सी आती देख कर कसाई बैल मारने को दौड़ा

तो बैल पानी पीने को दौड़ा

बैल को आता देख कर पानी आग बुझाने को दौड़ा

आग तुरन्त डंडे को जलाने को दौड़ी

आग को आता देख कर डंडा कुत्ते को मारने को दौड़ा

डंडे को आता देख कर कुत्ता सूअर को काटने को दौड़ा

और सूअर भाग कर सीढ़ी पर चढ़ गया
और इस तरह वह बुढ़िया अपने घर जा सकी।

4 मूनाचर और मानाचर[9]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश में कही सुनी जाती है। यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक गाँव में मूनाचर और मानाचर[10] नाम के दो आदमी रहते थे। एक बार वे दोनों रसभरी चुनने गये।

मूनाचर जितनी रसभरी चुनता जाता था मानाचर वह सब रसभरियाँ खाता जाता था। जब मूनाचर को यह पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ।

वह लकड़ी का एक डंडा ढूँढने निकला ताकि वह उससे एक रस्सी बना सके और उस रस्सी से मानाचर को फाँसी पर लटका सके क्योंकि उसने मूनाचर की रसभरियाँ खायीं थीं। सो वह एक डंडे के पास पहुँचा।

डंडा बोला — "मूनाचर भाई, कहाँ जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक डंडे की तलाश है जिससे मैं एक रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मानाचर को फाँसी लगाऊँगा जिसने मेरी सारी रसभरियाँ खायी हैं।"

---

[9] Moonachar and Manachar – a folktale from Ireland, Europe.
[This folktale appeared in "Popular Tales of the West Highlands: orally collected, vol 1. 1860." There it was collected from far Northern Europe region.] Taken from he Web Site : http://books.google.ca/books?pg=RA3-PA160&id=ZlMJAAAAQAAJ&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false]

[10] Moonachar and Manachar

डंडा बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं ले जा सकते जब तक तुम मुझे काटने के लिये कुल्हाड़ी नहीं लाते।" सो मूनाचर एक कुल्हाड़ी के पास पहुँचा।

कुल्हाड़ी ने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक कुल्हाड़ी की तलाश है जो डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा, रस्सी से फिर मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुल्हाड़ी बोली — "मुझे पाने के लिये तुम्हें मेरे डंडे पर एक झंडी बाँधनी होगी।" सो मूनाचर एक झंडी के पास गया।

झंडी ने मूनाचर से पूछा — "मूनाचर भाई, इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक झंडी की तलाश है जिसे मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

झंडी बोली — "मैं तब तक कुल्हाड़ी के ऊपर नहीं लग सकती जब तक तुम मुझे पानी से गीला नहीं करोगे।" सो मूनाचर पानी के पास पहुँचा।

पानी ने पूछा — "क्या तलाश कर रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं पानी की तलाश में हूँ। पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

पानी बोला — "तुम मुझे नहीं ले पाओगे जब तक कि हिरन मेरे अन्दर नहीं तैरेगा।" सो मूनाचर चलते चलते हिरन के पास पहुँचा।

हिरन ने पूछा — "किधर चल दिये मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मैं हिरन की तलाश में हूँ। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

हिरन बोला — "तुम मुझको नहीं पा सकते जब तक कोई कुत्ता मेरा पीछा न करे।" सो मूनाचर एक शिकारी कुत्ते के पास पहुँचा।

कुत्ता बोला — "मूनाचर भाई, किधर जा रहे हो?"

मूनाचर बोला — "मैं एक कुत्ते की तलाश में हूँ जो मेरे लिये हिरन लायेगा। हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा, झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं

रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

कुत्ता बोला — "तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगे जब तक तुम मेरे पंजों में मक्खन नहीं लगाओगे।" सो मूनाचर मक्खन ढूँढने चल दिया।

आगे जा कर उसे मक्खन मिला तो उसने पूछा — "मूनाचर भाई, कहाँ चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं मक्खन की तलाश में हूँ। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

मक्खन बोला — "मुझे पाने के लिये तुम्हें एक बिल्ली लानी पड़ेगी जो मुझे खुरचेगी।" सो मूनाचर एक बिल्ली के पास पहुँचा।

बिल्ली ने पूछा — "कैसे आना हुआ मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे एक बिल्ली चाहिये जो मेरे लिये मक्खन खुरचेगी। मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी मैं कुल्हाड़ी पर लगाऊँगा, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडे से मैं रस्सी बनाऊँगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

बिल्ली बोली — "तुम मुझे नहीं पा सकते जब तक तुम मुझे दूध नहीं पिलाओगे।" सो मूनाचर एक गाय के पास आया।

गाय बोली — "तुम सुखी रहो मूनाचर भाई, किधर चल दिये?"

मूनाचर बोला — "मैं एक गाय की तलाश में हूँ जिसका दूध बिल्ली पियेगी। बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खायी हैं।"

गाय बोली — "मेरा दूध पाने के लिये तुमको भूसे वालों से भूसा लाना पड़ेगा।" सो मूनाचर भूसे वालों के पास पहुँचा।

भूसे वाले बोले — "किसकी तलाश में घूम रहे हो मूनाचर भाई?"

मूनाचर बोला — "मुझे थोड़े से भूसे की तलाश है। यह भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा। गाय मुझे दूध देगी, मैं वह दूध बिल्ली को

पिलाऊँगा, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

भूसे वाला बोला — "मूनाचर भाई, हम तुमको भूसा तब तक नहीं दे सकते जब तक तुम उस चक्की वाले से हमको केक बनाने का सामान न ला दो।" सो मूनाचर चक्की वाले के पास चल दिया।

चक्की वाले ने पूछा — "मूनाचर भाई इधर कैसे आना हुआ?"

मूनाचर बोला — "मुझे केक बनाने के समान की तलाश है। यह सामान मैं भूसे वालों को दूँगा।

भूसे वाले मुझे भूसा देंगे, भूसा मैं गाय को खिलाऊँगा, गाय मुझे दूध देगी, दूध बिल्ली पियेगी, बिल्ली मेरे लिये मक्खन खुरचेगी, मैं मक्खन कुत्ते के पंजों में लगाऊँगा, कुत्ता मेरे लिये हिरन ले कर आयेगा, हिरन पानी में तैरेगा, पानी झंडी को गीला करेगा।

झंडी कुल्हाड़ी पर लगेगी, कुल्हाड़ी डंडा काटेगी, डंडा रस्सी बनायेगा और उस रस्सी से मैं मानाचर को फाँसी लगाऊँगा क्योंकि मानाचर ने मेरी सारी रसभरियाँ खा ली हैं।"

चक्की वाला बोला — “जब तक तुम मुझे इस चलनी में उस नदी से पानी भर कर नहीं लाते तब तक मैं तुमको केक बनाने का सामान नहीं दे सकता।”

मूनाचर चलनी ले कर नदी पर पहुँचा। वहाँ उसने चलनी में पानी भरने की बहुत कोशिश की पर जैसे ही वह चलनी में पानी में भर कर उसे ऊपर उठाता सारा पानी उसके छेदों में से निकल जाता। ऐसा उसने कई बार किया और हर बार उसका पानी चलनी के छेदों से हो कर नीचे बह गया।

इतने में एक कौआ ऊपर से उड़ा जा रहा था। मूनाचर को चलनी में पानी भरते देख कर बोला — “पोतो, पोतो।” मूनाचर को उसकी बात समझ में आ गयी।

उसने पास पड़ी लाल मिट्टी उठायी और नदी के किनारे लगी घास उखाड़ी और दोनों को ठीक से मिला कर चलनी के ऊपर पोत दिया। कुछ देर में चलनी के छेद बन्द हो गये और चलनी में पानी भर गया।

पानी ला कर उसने चक्की वाले को दिया,
चक्की वाले ने उसको केक बनाने का सामान दिया,
केक बनाने का सामान ले जा कर उसने भूसे वालों को दिया,
भूसे वालों ने उसे भूसा दिया, भूसा उसने गाय को खिलाया,

गाय ने उसे दूध दिया, दूध उसने बिल्ली को पिलाया,
बिल्ली ने मक्खन खुरचा, मक्खन उसने कुत्ते के पंजों पर लगाया,
कुत्ता हिरन के पीछे भागा, हिरन पानी में तैरा,
पानी ने पत्थर को गीला किया, पत्थर ने कुल्हाड़ी तेज की,
कुल्हाड़ी ने डंडा काटा, डंडे से मूनाचर ने रस्सी बनायी

और जब तक यह सब हुआ तब तक तो मानाचर बहुत दूर निकल गया था। बेचारा मूनाचर।

कई और देशों में भी ऐसी कहानियाँ मिलती हैं।

5 मूराचुग और मीनाचुग[11]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह कहानी भी पिछली कहानी मूनाचर और मानाचर जैसी ही है पर यह यूरोप के ब्रिटेन के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

एक बार मूराचुग और मीनाचुग दोनों फल इकट्ठा करने गये। मूराचुग फल इकट्ठा करता तो मीनाचुग उसको खा लेती।

मूराचुग को यह देख कर बहुत गुस्सा आया तो उसने सोचा कि वह मीनाचुग को मारने के लिये कहीं से एक लकड़ी देखे क्योंकि वह उसके हिस्से के सारे फल खाये जा रही थी।

जब उसको लकड़ी मिल गयी तो उस लकड़ी ने मूराचुग से पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे मीनाचुग को पीटने के लिये एक डंडी चाहिये क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

डंडी बोली — "तुम मुझे ऐसे नहीं पा सकते। मुझको लेने के लिये तुमको एक कुल्हाड़ी लानी पड़ेगी वही मुझे काटेगी।" सो मूराचर एक कुल्हाड़ी के पास गया।

---

[11] Moorachug and Meenachug - a folktale from Scotland, Europe. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type2030.html
Translated by DL Ashliman. Ashliman has taken from the book "Popular Tales of the West Highlands: Orally Collected, vol. 1". By John Francis Campbell.

कुल्हाड़ी ने मूराचुग से पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे डंडी काटने के लिये एक कुल्हाड़ी चाहिये जिससे मैं एक डंडी काटूँगा। वह डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

कुल्हाड़ी बोली — "तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते। मुझे पाने के लिये तुमको एक पत्थर लाना पड़ेगा जो मेरे ऊपर धार रखेगा।" सो मूराचर एक पत्थर के पास गया।

पत्थर ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे एक पत्थर चाहिये जो कुल्हाड़ी पर धार रख सके। वह कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, वह डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

पत्थर बोला — "तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते मूराचुग। मुझे पाने के लिये तुमको पानी लाना पड़ेगा जो पहले मुझे गीला कर सके।" सो मूराचर पानी के पास गया।

पानी ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे थोड़ा पानी चाहिये जो पत्थर को गीला कर सके। पत्थर गीला हो कर

कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

पानी बोला — "तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते मूराचुग। मुझे पाने के लिये तुमको एक हिरन लाना पड़ेगा जो मुझमें तैर सके।" सो मूराचुग एक हिरन के पास पहुँचा।

हिरन ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे हिरन चाहिये जो पानी में तैरे ताकि मैं पानी ले सकूँ। पानी पत्थर को गीला करेगा, पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

हिरन बोला — "पर तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते। मुझे पाने के लिये तुमको एक कुत्ता लाना पड़ेगा जो मुझे भगा सके।" सो बेचारा मूराचुग कुत्ते के पास पहुँचा।

मूराचुग को देखते ही कुत्ता बोला — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे एक कुत्ता चाहिये जो हिरन को भगा सके। हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, इस तरह मैं पानी ले सकूँगा, पानी पत्थर को गीला करेगा। पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक

डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।”

कुत्ता बोला — “पर तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते मूराचुग। मुझे पाने के लिये तुमको मक्खन लाना पड़ेगा जो तुम मेरे पंजों पर लगा सको।” सो मूराचुग मक्खन के पास गया।

मूराचुग को देखते ही मक्खन बोला — “ओ वूराचाय, आज की कोई नयी खबर?”

मूराचुग बोला — “आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे कुछ मक्खन चाहिये जो में कुत्ते के पंजों पर लगा सकूँ। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, उससे मुझे पानी मिलेगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, वह डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।”

मक्खन बोला — “पर तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते। मुझे पाने के लिये तुमको एक चूहा लाना पड़ेगा जो मुझे खुरच सके।” सो मूराचुग चूहे के पास गया।

मूराचुग को देखते ही चूहा बोला — “ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?”

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है चूहे भाई। मुझे एक चूहा चाहिये जो मेरे लिये कुछ मक्खन खुरच सके ताकि मैं उसे कुत्ते के पंजों पर लगा सकूँ। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, फिर मैं पानी ले सकूँगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

चूहा बोला — "पर तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते मूनाचुग भाई। मुझे पाने के लिये तुमको एक बिल्ला लाना पड़ेगा जो मुझे ढूँढ सके।" बेचारा मूराचुग बिल्ले के पास गया।

बिल्ले ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे एक बिल्ला चाहिये जो मेरे लिये चूहे को ढूँढ सके। चूहा मक्खन खुरचेगा जिसे मैं कुत्ते के पंजों पर लगा सकूँ। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, उससे मैं पानी ले सकूँगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

बिल्ला बोला — "पर तुम मुझको ऐसे ही नहीं पा सकते। मुझे पाने के लिये तुमको मेरे लिये दूध लाना पड़ेगा जिसे पी कर मुझमें ताकत आ जाये ताकि मैं चूहे का पीछा कर सकूँ।" अब मूराचुग एक गाय के पास गया।

गाय ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "ओ गाय, आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे एक गाय चाहिये जो मुझे दूध दे सके। वह दूध मैं एक बिल्ले को पिलाऊँगा जिससे उसमें ताकत आ जाये और वह चूहे को पकड़ सके।

चूहा मक्खन खुरचेगा जिसे मैं कुत्ते के पंजों पर लगाऊँगा। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, उससे मुझे पानी मिलेगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

गाय बोली — "पर तुम मेरा दूध ऐसे ही नहीं ले सकते मूनाचुग भाई। मेरा दूध लेने के लिये तुमको मेरे लिये पहले भूसाघर से भूसा लाना पड़ेगा जिसे खा कर मैं दूध दे सकूँ।" सो मूराचुग एक भूसाघर पहुँचा।

भूसाघर ने पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "ओ भूसाघर, आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे थोड़े से भूसे की जरूरत है जिसको मैं गाय को खिलाऊँगा। भूसा खा कर वह मुझे दूध देगी। वह दूध मैं एक बिल्ले को पिलाऊँगा जिससे उसमें ताकत आ जाये और वह चूहे को पकड़ सके।

चूहा मक्खन खुरचेगा जिसे मैं कुत्ते के पंजों पर लगाऊँगा। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, इससे मुझे पानी मिलेगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

भूसाघर बोला — "पर तुम मुझसे भूसा ऐसे ही नहीं ले सकते। मुझसे भूसा लेने के लिये तुमको मेरे लिये किसी डबल रोटी बनाने वाले के घर से आटा लाना पड़ेगा जिसे खा कर मैं तुमको भूसा दे सकूँ।" सो मूराचुग एक डबल रोटी बनाने वाले के घर पहुँचा।

डबल रोटी बनाने वाले की पत्नी ने उससे पूछा — "ओ वूराचाय, आज की क्या खबर है?"

मूराचुग बोला — "मैम, आज तो बस मेरी ही खबर है। मुझे थोड़े से आटे की जरूरत है जिसको मैं भूसा घर को दूँगा। भूसाघर उसको ले कर मुझे भूसा देगा। भूसा खा कर गाय दूध देगी। वह दूध मैं एक बिल्ले को पिलाऊँगा जिससे उसमें ताकत आ जाये और वह चूहे को पकड़ सके।

चूहा मक्खन खुरचेगा जिसे मैं कुत्ते के पंजों पर लगाऊँगा। मक्खन लगने पर कुत्ता हिरन को भगायेगा, हिरन भागेगा तो वह पानी में तैरेगा, इससे मुझे पानी मिलेगा, पानी पत्थर को गीला करेगा।

पत्थर गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखेगा, कुल्हाड़ी मेरे लिये एक डंडी काटेगी, डंडी मीनाचुग को पीटेगी क्योंकि वह मेरे हिस्से के फल खा रही है।"

पत्नी बोली — "पर तुम मुझसे वह आटा ऐसे ही नहीं ले सकते क्योंकि मुझे उसको बनाने के लिये तुम्हें मुझे पानी ला कर देना पड़ेगा। उस पानी से आटा मल कर ही मैं तुमको आटा दे सकूँगी।"

मूराचुग ने पूछा — "पर मैं तुम्हारे लिये पानी कैसे लाऊँ यहाँ तो केवल एक चलनी ही है।"

सो मूराचुग ने वह चलनी उठायी और पानी लेने चल दिया। वह उसमें जितना भी पानी भरता उसकी हर बूँद उसके छेदों में से हो कर नीचे निकल जाती।

तभी एक चिड़िया उसके ऊपर उड़ी और चिल्लायी — "ओ बेवकूफ, ओ बेवकूफ।"

मूराचुग बोला — "तुम ठीक कहती हो मैं बेवकूफ ही तो हूँ।"

चिड़िया बोली — "तुम मिट्टी घास में मिला कर इसके छेद बन्द कर लो तभी तुम इसमें पानी भर सकोगे।"

मूराचुग ने वैसा ही किया। इस तरह वह उस चलनी में पानी भर सका। उस चलनी में पानी भर कर वह डबल रोटी बनाने वाले की पत्नी के पास ले गया।

पत्नी ने आटा मला और आटा मल कर मूराचुग को दिया।

मूराचुग ने आटा भूसाघर को दिया तो उसने उसको भूसा दिया।

मूराचुग ने भूसा गाय को दिया तो उसने उसको दूध दिया।

मूराचुग ने दूध बिल्ले को पिलाया तो बिल्ले ने चूहे को पकड़ा।

चूहा मक्खन खुरचने के लिये भागा

मूराचुग ने मक्खन कुत्ते के पैरों पर लगाया कुत्ते ने हिरन को भगाया

हिरन जा कर पानी में तैरा तो पानी ने मूराचुग को पानी दिया

मूराचुग ने पानी ले कर पत्थर को गीला किया

पत्थर ने गीला हो कर कुल्हाड़ी पर धार रखी
कुल्हाड़ी ले कर मूराचुग ने एक डंडी काटी
और डंडी काट कर वह मीनाचुग को पीटने पहुँचा।

पर जब तक मूराचुग मीनाचुग को पीटने के लिये पहुँचा तब तक तो मीनाचुग उसके सारे फल खा कर वहाँ से जा चुकी थी।[12]

बेचारा मूराचुग।

[12] Notes – This is the best known of all Gaelic (a group of languages spoken by Ireland, Norse and Scotland people) tales. It is the infant ladder to learning a chain of cause and effect, and fully as sensible as any of its kind. It used to be commonly taught to children of five or six years of age, and repeated by school boys, and it is still remembered by grown-up people in all parts of the highlands. There are few variations but those variatons do not matter much.

The tale has sixteen steps, four of which contain double ideas. The English "House that Jack Built" has eleven. The Scotch "Old Woman with the Silver Penny" has twelve. The Norsk "Cock and Hen A-nutting" twelve, ten of which are double. The German story in Grimm has five or six, all single ideas. All these are different.

6 मुर्गा और चूहा[13]

बिल्ले और चुहिया जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक मुर्गा और एक चूहा पास पास रहते थे। वे दोनों आपस में बड़े अच्छे दोस्त थे।

एक दिन चूहे ने मुर्गे से कहा — "दोस्त मुर्गे, चलो किसी दूर के पेड़ से कुछ गिरियाँ[14] खा कर आते हैं।"

मुर्गा बोला — "चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा।"

सो दोनों एक गिरी के पेड़ के पास पहुँचे। चूहा तो तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उसने गिरियाँ खानी शुरू कर दीं। पर बेचारा मुर्गा उड़ता रहा उड़ता रहा पर वह चूहे के पास तक नहीं पहुँच सका।

जब उसने देखा कि उसके पेड़ के ऊपर पहुँचने की कोई उम्मीद नहीं है तो वह चूहे से बोला — "दोस्त चूहे, तुम्हें मालूम है कि मचाहता हूँ कि तुम क्या करो। तुम मुझे ऊपर से एक गिरी फेंको।"

---

[13] The Cock and the Mouse (Story No 80)– a folktale from Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[14] Translated for the word "Nuts". See their picture above.

चूहे ने एक गिरी तोड़ी और उसको मुर्गे के सिर पर फेंक दी। इससे बेचारे मुर्गे का सिर फूट गया और उसके सिर से खून बहने लगा।

यह देख कर वह एक बुढ़िया के पास गया और उससे बोला — "चाची चाची, मुझे कुछ फटे कपड़े दो ताकि मैं उनको अपने सिर पर बाँध कर अपना यह घाव ठीक कर सकूँ।"

बुढ़िया चाची बोली — "जब तुम मुझे कुत्ते के दो बाल ला कर दोगे तभी मैं तुमको फटे कपड़े दूँगी।"

मुर्गा कुत्ते के पास गया और उससे बोला — "ओ कुत्ते, तू मुझे अपने दो बाल दे। ये बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। बुढ़िया चाची मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

कुत्ता बोला — "अगर तुम मुझे डबल रोटी ला कर दोगे तभी मैं तुमको अपने बाल दूँगा।"

सो मुर्गा एक डबल रोटी बनाने वाले के पास गया और उससे कहा — "ओ बेकर[15] मुझे थोड़ी सी डबल रोटी दे। यह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। और तब वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।"

[15] Baker is a man who bakes bread, bun cake, biscuits etc.

बेकर बोला — “पहले तुम मुझे लकड़ी ला कर दो तब मैं तुमको डबल रोटी दूँगा।”

सो मुर्गा जंगल गया और उससे बोला — “ओ जंगल, मुझे थोड़ी सी लकड़ी दे। यह लकड़ी ले जा कर मैं बेकर को दूँगा।

बेकर मुझे डबल रोटी देगा। वह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।”

जंगल बोला — “अगर तुम मुझे थोड़ा सा पानी ला कर दोगे तभी मैं तुमको लकड़ी दूँगा।”

सो मुर्गा एक फव्वारे के पास गया और उससे बोला — “फव्वारे फव्वारे मुझे थोड़ा सा पानी दे। यह पानी ले जा कर मैं जंगल को दूँगा। जंगल मुझे लकड़ी देगा। वह लकड़ी ले जा कर मैं बेकर को दूँगा।

बेकर मुझे डबल रोटी देगा। वह डबल रोटी मैं कुत्ते को दूँगा। कुत्ता मुझे अपने दो बाल देगा। उसके बाल ले जा कर मैं बुढ़िया चाची को दूँगा। वह मुझे फटे कपड़े देगी जिससे मैं अपने सिर का घाव ठीक करूँगा।”

फव्वारे ने उसको पानी दिया
वह पानी ले जा कर उसने जंगल को दिया
जंगल ने उसे लकड़ी दी

वह लकड़ी ले जा कर उसने बेकर को दी।
बेकर ने उसको डबल रोटी दी
वह डबल रोटी ले कर उसने कुत्ते को दी

कुत्ते ने उसे अपने दो बाल दिये
बाल ले जा कर उसने बुढ़िया चाची को दिये
बुढ़िया चाची ने उसे फटे कपड़े दिये
जिनको अपने सिर पर बाँध कर वह अपने सिर का घाव ठीक कर सका।"

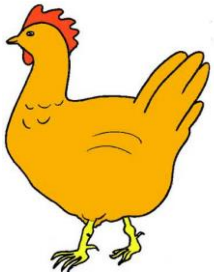

7 नाक कटी चिड़िया[16]

बिल्ला और चुहिया जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के कैनेडा देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक किसान एक पत्थर से मछली पीस रहा था कि इतने में एक चिड़िया उसके पास आ बैठी और बोली — "ओ किसान, मुझे बहुत भूख लगी है कुछ खाने को दे।"

किसान कुछ बोला नहीं और उसने पास पड़े चाकू से उसकी नाक काट ली।

चिड़िया बोली — "किसान, तूने मेरी नाक काटी है अब इसे बाँधने के लिये तू मुझे लाल धागा भी दे।"

किसान बोला — "जा और जा कर उस बुढ़िया से ले ले।"

चिड़िया बुढ़िया के पास गयी और बोली — "बुढ़िया बुढ़िया, किसान ने मेरी नाक काट ली है इसे बाँधने के लिये लाल धागा दे।"

बुढ़िया बोली — "मैं तुझे लाल धागा क्यों दूँ? मैंने तो तेरी नाक नहीं काटी।

चिड़िया बोली — "अगर तू मुझे लाल धागा नहीं देगी तो मौथ[17] आ कर तेरा कपड़ा खा जायेगी। आ मौथ आ और आ कर

---

[16] The Noseless Bird – a story told and heard in Iceland, but this version is from Manitoba State of Canada as Iceland people came here.

[17] Moth is a tiny insect which eats the cloth.

बुढ़िया का कपड़ा खा जा। बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

मौथ बोली — मैं तो नहीं खाती बुढ़िया का कपड़ा। बुढ़िया ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तो चुहिया आ कर तुझे खा जायेगी। ओ चुहिया आ और आ कर मौथ को खा जा। क्योंकि मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

चुहिया बोली — "मैं तो नहीं खाती मौथ को। मौथ ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तो बिल्ली आ कर तुझे खा लेगी। आ री बिल्ली आ और आ कर चुहिया को खा ले। क्योंकि चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

बिल्ली बोली — "मैं तो नहीं खाती चुहिया को। चुहिया ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो कुत्ता आ कर तुझे खा लेगा। आ कुत्ते आ और आ कर इस बिल्ली को खा ले। क्योंकि यह बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

कुत्ता बोला — "मैं तो नहीं खाता बिल्ली को, बिल्ली से मेरी कोई दुश्मनी नहीं।"

इस पर चिड़िया बोली — "तो डंडा आ कर तुझे मारेगा। आ रे डंडे आ और इस कुत्ते को मार क्योंकि यह बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

डंडा बोला — "मैं क्यों मारूँ कुत्ते को? कुत्ते ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब आग आ कर तुझे जला देगी। आ री आग आ और इस डंडे को जला क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता। बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

आग बोली — "मैं क्यों जलाऊँ डंडे को? डंडे ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब पानी आ कर तुझे बुझा देगा। आ रे पानी आ और इस आग को बुझा क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

पानी बोला — "मैं क्यों बुझाऊँ आग, आग ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

चिड़िया बोली — "तब बैल आ कर तुझे पी जायेगा। आ रे बैल आ और इस पानी को पी जा क्योंकि पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता। बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

बैल बोला — "मैं क्यों पियूँ पानी, पानी ने मेरा क्या बिगाड़ा है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो तुम्हारे ऊपर जूआ[18] रखा जायेगा ओ बैल। आ रे जूए आ और बैल के ऊपर बैठ जा क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

जूआ बोला — "ओ चिड़िया रानी, मैं बैल के ऊपर क्यों बैठूँ? बैल से मेरी क्या दुश्मनी है?"

इस पर चिड़िया बोली — "तो कुल्हाड़ी आ कर तुझे काट देगी। आ री आ कुल्हाड़ी आ और बैल के जूए को काट, क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता। कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बॉधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

---

[18] Translated for the word "Yoke" – the wooden stick to be kept on bulls while joining them to the cart. See the picture above.

कुल्हाड़ी बोली — "मैं तो जूए को नहीं काटती। जूए का कोई कुसूर नहीं है।"

इस पर चिड़िया बहुत नाराज हुई और बोली — "तो पत्थर आ कर तुझ पर धार रखेगा। आ रे आ पत्थर आ और कुल्हाड़ी पर धार रख, क्योंकि कुल्हाड़ी जूए को नहीं काटती।

जूआ बैल पर नहीं बैठता, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता। कुत्ता बिल्ली को नहीं खाता, बिल्ली चुहिया को नहीं खाती।

चुहिया मौथ को नहीं खाती, मौथ बुढ़िया का कपड़ा नहीं खाती, बुढ़िया मेरी नाक बाँधने के लिये लाल धागा नहीं देती क्योंकि किसान ने मेरी नाक काट ली है।"

पत्थर बोला — "हाँ हाँ चिड़िया रानी, क्यों नहीं? तुमने एक बार मेरी जान बचायी थी। आज मैं तुम्हारा काम जरूर करूँगा। बताओ कहाँ है कुल्हाड़ी?"

कुल्हाड़ी यह सुन कर डर गयी और डर के मारे वह जूए को काटने दौड़ी।

कुल्हाड़ी को आते देख कर जूआ बैल पर बैठने दौड़ा
बैल पानी पीने दौड़ा, पानी आग बुझाने दौड़ा
आग डंडा जलाने दौड़ी, डंडा कुत्ते को मारने दौड़ा।

कुत्ता बिल्ली खाने दौड़ा, बिल्ली चुहिया खाने दौड़ी
चुहिया मौथ खाने भागी, मौथ बुढ़िया का कपड़ा खाने दौड़ी

और बुढ़िया ने चिड़िया को उसकी नाक बाँधने के लिये लाल धागा दे दिया।

इस तरह सबकी जान बच गयी और चिड़िया को भी अपनी नाक वापस मिल गयी।

8 सैक्सटन की नाक[19]

बिल्ले और चुहिया जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक सैक्सटन[20] चर्च में सफाई कर रहा था कि उसको फर्श पर पड़ा एक पैसे का टुकड़ा[21] मिला। उसने वह उठा कर रख लिया और सोचने लगा कि वह उससे क्या खरीदेगा।

अगर उसने उससे बादाम या और कोई गिरी खरीदी तो चूहे आ जायेंगे और वह चूहों से बहुत डरता था। सो सोचते सोचते उसने उससे कुछ भुनी हुई मूँगफली खरीदीं और खा लीं। आखीर में उसके पास एक मूँगफली बच गयी।

उसको वह पास की एक बेकरी[22] में ले गया और वहाँ उसकी मालकिन से कहा कि वह उसको अपने पास सँभाल कर रख ले वह उसको अगले दिन आ कर ले जायेगा। बेकरी की मालकिन ने कहा कि वह उस दाने को बैन्च पर रख दे और वह आ कर उसे उठा कर रख लेगी।

---

[19] Sexton's Nose (Story No 79)– a folktale from Italy from its Sicily area, Europe.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885.
Hindi translation of its 125 out of 200 tales is available from hindifolktales@gmail.com

[20] A sexton is an officer of a church, congregation, or synagogue charged with the maintenance of its buildings and/or the surrounding graveyard.

[21] Translated for the words "Piece of Money" – piece of money means 1/5th of the cent.

[22] Bakery is a shop or place where the bread, bun cake, biscuits etc are baked.

पर जब वह उसको लेने गयी तो उसने देखा कि वह दाना तो वहाँ नहीं है। उसको तो मुर्गा खा गया था।

अगले दिन वह सैक्सटन अपना मूँगफली का दाना माँगने आया तो बेकरी की मालकिन ने उसको बताया कि उस दाने का क्या हुआ था।

यह जान कर सैक्सटन ने कहा कि या तो उसका मूँगफली का दाना वापस किया जाये नहीं तो वह मुर्गा उसको दे दिया जाये जिसने उसका मूँगफली का दाना खाया था।

अब क्योंकि मूँगफली का दाना तो मुर्गे ने खा लिया था तो वह तो वापस आ नहीं सकता था सो सैक्सटन को मुर्गा दे दिया गया।

सैक्सटन के पास मुर्गा रखने की कोई जगह नहीं थी तो वह उसको रखने के लिये चक्की वाले की पत्नी के पास ले गया और उसको अगले दिन तक रखने के लिये कहा।

चक्की वाले की पत्नी ने उसे रख लिया। चक्की वाले की पत्नी के पास एक सूअर था। उसने वह मुर्गा खा लिया।

अगले दिन सैक्सटन जब अपना मुर्गा माँगने आया तो पता चला कि चक्की वाले की पत्नी के सूअर ने उसका मुर्गा खा लिया था।

सैक्सटन ने कहा या तो उसको उसका मुर्गा वापस किया जाये नहीं तो उसको वह सूअर दे दिया जाये जिसने उसका मुर्गा खाया था। अब क्योंकि मुर्गा तो वापस आ नहीं सकता था सो उसको सूअर दे दिया गया।

वह सूअर उसने अपने एक दोस्त के घर छोड़ा। उसका वह दोस्त पेस्ट्री बनाता था। उसके एक बेटी थी जिसकी शादी अगले दिन होने वाली थी।

उसके दोस्त की पत्नी बहुत ही नीच और एक चालाक किस्म की स्त्री थी। उसने अपनी बेटी की शादी के लिये उस सूअर को मार दिया और अगले दिन जब सैक्सटन अपना सूअर लेने आया तो उसको कह दिया कि तुम्हारा सूअर तो भाग गया। इस पर सैक्सटन ने कहा कि या तो वह उसका सूअर दे नहीं तो अपनी बेटी दे।

अब सूअर तो दिया नहीं जा सकता था क्योंकि वह तो मारा जा चुका था सो उसने उसको अपनी बेटी दे दी। सैक्सटन ने उसकी बेटी को एक थैले में रखा और चल दिया।

अब वह एक स्त्री के पास पहुँचा जो एक दूकान चलाती थी। उसने उसको वह थैला दिया और कहा कि उस थैले में भूसा था और वह उस थैले को सँभाल कर रख ले वह बाद में आ कर ले जायेगा। उस स्त्री ने उसे सँभाल कर रख लिया।

उस स्त्री के पास कुछ मुर्गियाँ थीं। जब सैक्सटन उस थैले को वहाँ छोड़ कर चला गया तो उस स्त्री ने सोचा कि वह उस थैले में से थोड़ा सा भूसा निकाल कर अपनी मुर्गियों को खिला देती है।

पर जब उसने वह थैला खोला तो उसमें से तो भूसे की बजाय एक लड़की निकली। उस स्त्री ने उस लड़की को तो थैले में से बाहर निकाल लिया और उसकी जगह एक कुत्ता रख दिया।

अगले दिन सैक्सटन आ कर अपना थैला ले गया और समुद्र के किनारे चल दिया। वह सोच रहा था कि वह उस लड़की को समुद्र में फेंक देगा।

समुद्र के किनारे पहुँच कर उसने लड़की को फेंकने के लिये थैला खोला तो गुस्से में भरा कुत्ता बाहर निकला और उसकी नाक काट कर भाग गया। सैक्सटन दर्द के मारे चिल्ला पड़ा। उसकी नाक से खून बह कर उसके चेहरे पर टपकने लगा।

वह चिल्लाया — "ओ कुत्ते, मुझे अपना एक बाल तो देता जा ताकि मैं उसको अपनी नाक में लगा कर तेरे दिये हुए घाव को भर सकूँ।[23]

कुत्ता बोला — "अगर तुम्हें मेरा बाल चाहिये तो पहले मुझे डबल रोटी ला कर दो।"

सैक्सटन एक बेकरी की तरफ भागा और उसके मालिक से बोला — "मुझे थोड़ी सी डबल रोटी दे। यह डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

बेकरी का मालिक बोला — "तुमको डबल रोटी चाहिये तो पहले तुम मुझे लकड़ी ला कर दो।"

---

[23] Perhaps it is believed in Italy that whichever dog has bitten somebody, if a hair of the same dog is put on its bite, that wound is healed.

सो सैक्सटन एक लकड़ी काटने वाले के पास गया और उससे कहा — “ओ लकड़ी काटने वाले मुझे थोड़ी सी लकड़ी दे। मैं यह लकड़ी बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।”

लकड़ी काटने वाला बोला — “अगर तुम्हें लकड़ी चाहिये तो पहले मुझे एक कुल्हाड़ी ला कर दो।”

सैक्सटन तुरन्त ही एक लोहार के पास दौडा गया और उससे कहा — “लोहार लोहार, मुझे एक कुल्हाड़ी दे। मैं यह कुल्हाड़ी लकड़ी काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। वह लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।”

लोहार बोला — “अगर तुम्हें कुल्हाड़ी चाहिये तो पहले तुम मुझे कोयला ला कर दो।”

सैक्सटन तुरन्त ही भागा भागा कोयले वाले के पास गया और उससे कहा — “ओ कोयले वाले, मुझे कोयला दे। मैं यह कोयला लोहार को दूँगा। लोहार मुझे कुल्हाड़ी देगा। मैं यह कुल्हाड़ी लकड़ी

काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

कोयले वाला बोला — "अगर तुमको कोयला चाहिये तो पहले तुम मुझे गाड़ी ला कर दो।"

सैक्सटन गाड़ी लाने दौड़ा गया। वह जा कर गाड़ी वाले से बोला — "ओ गाड़ी वाले मुझे गाड़ी दे।

यह गाड़ी मैं कोयले वाले को दूँगा। कोयले वाला मुझे कोयला देगा। मैं वह कोयला लोहार को दूँगा। लोहार मुझे कुल्हाड़ी देगा।

कुल्हाड़ी मैं लकड़ी काटने वाले को दूँगा। लकड़ी काटने वाला मुझे लकड़ी देगा। लकड़ी मैं बेकरी के मालिक को दूँगा।

बेकरी का मालिक मुझे डबल रोटी देगा। डबल रोटी मैं कुत्ते को खिलाऊँगा। कुत्ता मुझे अपना एक बाल देगा जिसको मैं अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखूँगा।"

गाड़ी वाले ने देखा कि सैक्सटन बहुत कष्ट में है। उसको उसके ऊपर दया आ गयी सो उसने उसको गाड़ी दे दी। गाड़ी पा कर सैक्सटन बहुत खुश हुआ।

गाड़ी ले कर वह भागा भागा कोयले वाले के पास गया

उसने वह गाड़ी कोयले वाले को दी
कोयले वाले ने उसको कोयला दिया
कोयला उसने लोहार को दिया

लोहार ने उसे कुल्हाड़ी दी
कुल्हाड़ी ले जा कर उसने लकड़ी काटने वाले को दी
लकड़ी काटने वाले ने उसको लकड़ी दी
लकड़ी ले जा कर उसने बेकरी के मालिक को दी

बेकरी के मालिक ने उसे डबल रोटी दी
डबल रोटी उसने कुत्ते को खिलायी
कुत्ते ने उसे अपना एक बाल दिया जिसको उसने अपना घाव भरने के लिये अपनी नाक में रखा।

और तब जा कर कहीं उसका घाव भरा।

9 पत्नी और उसकी बैरीज़ की झाड़ी[24]

बिल्ला और चुहिया जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के ब्रिटेन देश के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

यह बात तबकी है जब हंस सूअर थे और टर्की तम्बाकू चबाती थी और चिड़ियें जब अपना घोंसला आदमियों की दाढ़ी में बनाया करती थीं और बड़ी गिलहरी[25] जब आलू खाया करती थी।

उन दिनों एक पत्नी थी जो अपने घर में अकेली रहती थी। एक दिन वह अपने घर में झाड़ू लगा रही थी कि उसको दो पैनी मिलीं। उनको देख कर उसने सोचा कि वह उन दोनों पैनियों का क्या करे।

उसने सोचा कि वह बाजार जायेगी और एक बच्चा खरीद कर लायेगी। सो वह बाजार गयी और वहाँ से एक बच्चा खरीद कर ले लायी।

---

[24] The Wife and Her Bush of Berries - a folktale from Scotland, Britain, Europe.
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type2030.html Translated by DL Ashliman
Ashliman has taken it from "Popular Rhymes of Scotland". By Robert Chambers.
[On the same page another story is given with the title "The Wifie and Her Kiddie " a folktale from Scotland, Europe. Translated by DL Ashliman. He has taken this another story from "A Folk-Tale from Aberdeenshire," *The Folk-Lore Journal*, vol. 2, no. 9 (September 1884), pp. 277-78 by Walter Gregor. Both are exactly the same.]
[My Note : It is very difficult to read these stories on this Web Site as they are written in incomplete sentences and in Scottish English. Any error is regretted.]

[25] Translated for the word "Mole". See the picture above

जब वह घर जा रही थी तो उसको पास में बैरीज़[26] की एक सुन्दर सी झाड़ी उगी हुई दिखायी दी। उसने बच्चे से कहा — “तुम जा कर मेरे घर को देखो तब तक मैं बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।”

बच्चा बोला — “मैं तुम्हारा घर नहीं देखूँगा जब तक तुम बैरीज़ की उस सुन्दर झाड़ी से बैरीज़ ले कर नहीं आओगी।”

सो वह स्त्री कुत्ते के पास गयी और उससे बोली — “ओ कुत्ते, तू इस बच्चे को काट ले क्योंकि यह बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।”

कुत्ता बोला — “मैं नहीं काटता इस बच्चे को क्योंकि इस बच्चे ने मेरा कुछ बुरा नहीं किया।”

सो वह स्त्री फिर एक डंडे के पास गयी और उससे बोली — “डंडे डंडे, तू चल कर कुत्ते को मार क्योंकि कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।”

डंडा बोला — “नहीं मैं कुत्ते को नहीं मारता क्योंकि कुत्ते ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।”

---

[26] Berries are normally seedless small sized fruits grown on bushes, such as blue beries, black berries, rasp berries, straw berries etc… See their picture above.

सो वह स्त्री आग के पास गयी और उससे बोली — "आग आग चल, तू चल कर डंडे को जला क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

डंडा बोला — "नहीं नहीं, मैं कुत्ते को नहीं मारता क्योंकि कुत्ते ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

यह सुन कर वह स्त्री आग के पास गयी और उससे बोली — "आग आग चल, तू चल कर डंडे को जला क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

आग बोली — "नहीं मैं डंडे को नहीं जलाती क्योंकि डंडे ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

यह सुन कर वह स्त्री पानी के पास गयी और उससे बोली — "पानी पानी चल, तू चल कर आग को बुझा क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

पानी बोला — "नहीं, मैं आग को नहीं बुझाता क्योंकि आग ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

यह सुन कर वह स्त्री एक बैल के पास गयी और उससे बोली — "बैल बैल चल, चल कर तू पानी पी क्योंकि पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

बैल बोला — "मैं पानी को क्यों पियूँ क्योंकि पानी ने तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

यह सुन कर वह स्त्री एक कुल्हाड़ी के पास गयी और उससे बोली — "कुल्हाड़ी कुल्हाड़ी चल, चल कर तू बैल पर गिर जा क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती।

आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

कुल्हाड़ी बोली — "मैं बैल पर जा कर क्यों गिरूँ क्योंकि बैल ने तो मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ा।"

अब वह स्त्री एक लोहार के पास गयी और उससे बोली — "ओ लोहार चल, चल कर तू कुल्हाड़ी के फल को चिकना कर दे

क्योंकि कुल्हाड़ी बैल पर नहीं गिरती, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाती।

आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

लोहार बोला — "पर मैं कुल्हाड़ी के फल को चिकना क्यों करूँ क्योंकि कुल्हाड़ी ने तो मेरे साथ कभी कुछ बुरा किया ही नहीं।"

अब वह स्त्री एक रस्से के पास गयी और उससे बोली — "ओ रस्से चल, चल कर तू लोहार को फाँसी पर चढ़ा दे क्योंकि लोहार कुल्हाड़ी के फल को चिकना नहीं करता, कुल्हाड़ी बैल पर नहीं गिरती। बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती।

आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

रस्सी बोली — "पर मैं लोहार को फाँसी पर क्यों चढ़ाऊँ क्योंकि लोहार ने तो मेरे साथ कभी कुछ बुरा किया ही नहीं।"

यह सुन कर वह स्त्री एक चूहे के पास गयी और उससे बोली — "चूहे चूहे चल, चल कर तू रस्सी को काट डाल क्योंकि रस्सी लोहार को फाँसी पर नहीं चढ़ाती, लोहार कुल्हाड़ी के फल को

चिकना नहीं करता, कुल्हाड़ी बैल पर नहीं गिरती, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती।

आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

चूहा बोला — "पर मैं रस्सी को क्यों काटूँ क्योंकि रस्सी की मेरे साथ कोई दुश्मनी नहीं है।"

अब वह स्त्री एक बिल्ले के पास गयी और उससे बोली — "ओ बिल्ले, चल कर तू चूहे को खा ले क्योंकि चूहा रस्सी नहीं काटता, रस्सी लोहार को फाँसी पर नहीं चढ़ाती, लोहार कुल्हाड़ी का फल चिकना नहीं करता, कुल्हाड़ी बैल पर नहीं गिरती।

बैल पानी नहीं पीता, पानी आग को नहीं बुझाती, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता बच्चे को नहीं काटता और बच्चा मेरा घर नहीं देखता जब तक मैं अपनी बैरीज़ की इस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ ले कर आती हूँ।"

बिल्ला बोला — "नहीं नहीं, मैं चूहे को नहीं खाता क्योंकि चूहे ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

अब उस स्त्री ने बिल्ले से खुशामद करते हुए कहा — "ओ बिल्ले चल न, मैं तुझको दूध और डबल रोटी दूँगी।"

दूध और डबल रोटी का नाम सुन कर बिल्ले के मुँह में पानी भर आया और वह उस स्त्री के साथ चल दिया।

बिल्ला चूहे को खाने चला
तो बिल्ले को आता देख कर चूहा रस्सी काटने भागा
रस्सी चूहे को देख कर लोहार को फाँसी पर चढ़ाने के लिये भागी
लोहार कुल्हाड़ी चिकनी करने के लिये भागा
कुल्हाड़ी बैल पर गिरने के लिये भागी

कुल्हाड़ी को आते देख बैल पानी पीने के लिये भागा।
पानी आग बुझाने के लिये भागी
आग डंडे को जलाने के लिये भागा
डंडा कुत्ते को मारने के लिये भागा

कुत्ता बच्चे को काटने के लिये भागा
और बच्चा घर देखने के लिये भागा।

उस बच्चे ने तब तक उस स्त्री के घर की रखवाली की जब तक वह अपनी बैरीज की उस सुन्दर सी झाड़ी से बैरीज़ तोड़ कर घर नहीं आ गयी।

10 नैनी जो खाना खाने घर नहीं जाती[27]

बिल्ले और चुहिया जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों में से नौर्वे[28] देश की कहानियों से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी। उसके एक बेटा था और उसके पास एक बकरी थी। बेटे का नाम ऐस्पैन था और बकरी नाम नैनी था।[29]

उन दोनों, यानी ऐस्पैन और नैनी की आपस में पटती नहीं थी क्योंकि बकरी को बाहर घूमना बहुत पसन्द था और वह शाम को घर वापस नहीं आना चाहती थी।

वह शाम के खाने के लिये कभी समय पर घर नहीं पहुँचती थी और ऐस्पैन को शाम को भूख लगी रहती।

एक दिन ऐस्पैन उसको घर वापस लाने के लिये अपने घर से बाहर निकला तो कुछ देर तक तो वह उसको ढूँढता रहा पर फिर वह उसको एक पहाड़ी के ऊपर दिखायी दे गयी।

---

[27] The Nanny Who Would't Go Home For Supper - a folktale from Norway, Europe.
Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type2030.html Translated by DL Ashliman
Ashliman has taken it from, Fairy Tales from the Far North, by Peter Christen Asbjornsen,
[My Note : It is very difficult to read this story on this Web Site as it is written in shorthand Scottish English.]

[28] Norway is one of the five European countries known as Norse, or Nordic, or Scandinavian countries situated in far Northern part of Europe – Iceland, Denmark, Finland, Norway, and Sweden

[29] The son's name was Espen and the goat's name was "Nanny".

ऐस्पैन वहीं से चिल्लाया — "ओ मेरी प्यारी नैनी, तुम वहाँ बहुत देर तक मत खड़ी रहो। अब वापस आ जाओ। बस अब यह तुम्हारे शाम के खाने का ठीक समय है। मुझे भी अब बहुत भूख लगी है और मैं भी अब खाना खाना चाहता हूँ।"

नैनी बाली — "नहीं अभी नहीं। पहले में यहाँ की यह हरी हरी घास खत्म कर लूँ और वहाँ की भी। मैं तब आऊँगी।"

ऐस्पैन बोला — "ठीक है। तब मैं यह बात जा कर माँ को बताता हूँ।"

"हाँ हाँ। बता दो जा कर फिर मैं शान्ति से यह घास खा सकूँगी।"

सो ऐस्पैन अपनी माँ के पास चला गया और उसने उसको नैनी के बारे में बता दिया तो उसकी माँ बोली — "तो जा कर लोमड़े को बुला ला वह आ कर उसको काट लेगा।"

लड़का लोमड़े के पास गया और बोला — "लोमड़े लोमड़े, ज़रा नैनी को तो काट लेना वह समय पर खाना खाने के लिये घर नहीं आती। मुझे बहुत भूख लगी है और मैं खाना खाना चाहता हूँ।"

लोमड़ा बोला — "नहीं नहीं, मुझे अपने मुँह पर सूअर के काँटे और बकरे की दाढ़ी नहीं चुभवानी।"

यह सुन कर लड़का वापस चला गया और जा कर माँ को बताया। तो माँ बोली "तो फिर भेड़िये के पास जा। उसको बोलना कि वह लोमड़े को खा ले।"

लड़का भेड़िये के पास गया और बोला — “भेड़िये, तुम लोमड़े को खा लो क्योंकि लोमड़ा बकरी को नहीं काटता, बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती और मुझे बहुत भूख लगी है और मैं खाना खाना चाहता हूँ।”

भेड़िया बोला — “मुझे अपने पंजे लोमड़े के पतले से चेहरे पर खराब नहीं करने। मैं नहीं आता।”

यह सुन कर लड़का वापस चला गया और जा कर यह सब अपनी माँ को बताया तो माँ बोली “तो फिर तू भालू के पास जा वह आ कर भेड़िये को खा लेगा।”

लड़का भालू के पास गया और बोला — “भालू, तुम भेड़िये को खा लो क्योंकि भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता, बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।”

भालू बोला — “नहीं मैं ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि मुझे अपने पंजे भेड़िये के चेहरे पर खराब नहीं करने। मैं नहीं आता।”

यह सुन कर लड़का फिर वापस चला गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली “तो फिर फ़िन शिकारी के पास जा कि वह भेड़िये को अपनी बन्दूक से मार दे।”

लड़का फ़िन शिकारी के पास गया और बोला — “फ़िन भाई, तुम भेड़िये को अपनी बन्दूक से मार दो क्योंकि भेड़िया लोमड़े का

नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता, बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती और मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

फ़िन बोला — "नहीं मैं ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि मुझे अपनी गोलियाँ भेड़िये पर खराब नहीं करनी। मैं नहीं आता तुम जाओ।"

यह सुन कर लड़का वापस चला गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो फिर तू फ़र के पेड़ के पास जा और उससे कहना कि वह फ़िन के ऊपर गिर कर उसको कुचल दे।"

लड़का फ़र के पेड़ के पास गया और बोला — "फ़र फ़र, तुम फ़िन को उसके ऊपर गिर कर उसे कुचल दो क्योंकि फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

फ़र का पेड़ बोला — "नहीं मैं ऐसा नहीं करूँगा। मुझे उस बेकार के शिकारी के लिये अपनी शाखें नहीं तोड़नी। तुम जाओ मैं नहीं आता।"

यह सुन कर लड़का वहाँ से भी वापस चला गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो फिर तू आग के पास जा और उससे कहना कि वह फ़र के पेड़ को जला दे।।"

सो वह लड़का आग के पास गया और बोला — "ओ आग, तुम फ़र के पेड़ को जला दो क्योंकि फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

आग बोली — "मैं फ़र को जलाने के लिये अपने आपको नहीं जला सकती। तुम जाओ मैं नहीं आती।"

यह सुन कर लड़का फिर वापस चला गया और जो कुछ आग ने कहा था जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो फिर अब तू पानी के पास जा और उसको बोलना कि वह आ कर आग बुझा दे।।"

सो वह लड़का पानी के पास गया और बोला — "पानी ओ पानी, तुम आओ और आग बुझा दो क्योंकि आग फ़र के पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

पानी बोला — "मैं अपने आपको आग बुझाने के ऊपर बरबाद नहीं कर सकता। तुम जाओ मैं नहीं आता।"

यह सुन कर लड़का बेचारा फिर वापस चला गया और घर जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो फिर अब तू बैल के पास जा ताकि वह आ कर उस पानी को पी ले।"

सो वह लड़का बैल के पास गया और बोला — "बैल, तुम आओ और आ कर पानी पी लो क्योंकि पानी आग नहीं बुझाती, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

बैल बोला — "मैं अपने आपको पानी पी कर फुलाना नहीं चाहता। तुम जाओ मैं नहीं आता।"

यह सुन कर लड़का बेचारा फिर घर वापस चला गया और जा कर यह सब माँ को बताया तो माँ बोली "तो फिर अब तू जूए[30] के पास जा ताकि वह बैल की गरदन के ऊपर बैठ सके।"

[30] Translated for the word "Yoke" – yoke is a wooden frame which is kept on the neck of the ox or oxen when he or they are yoked in a carriage to draw the carriage. See its picture above

सो वह लड़का अबकी बार जूए के पास गया और बोला — "आ रे आ ओ जूए, तू आ और आ कर बैल की गरदन के ऊपर बैठ जा क्योंकि बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

जूआ बोला — "मैं इस काम के लिये अपने आपको दो टुकड़ों में नहीं बाँट सकता। तुम जाओ मैं नहीं आता।"

यह सुन कर लड़का फिर अपनी माँ के पास वापस लौट गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो अब तू कुल्हाड़ी के पास जा और उसको बोलना कि वह जूए को काट दे।"

सो वह लड़का कुल्हाड़ी के पास गया और उससे बोला — "आ री कुल्हाड़ी आ और आ कर बैल का जूआ काट दे क्योंकि जूआ बैल की गरदन पर नहीं बैठता, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

कुल्हाड़ी बोली — "मैं इस काम के लिये अपनी धार खराब नहीं करने वाली। तुम जाओ मैं नहीं आती।"

यह सुन कर लड़का फिर अपनी माँ के पास गया और जा कर माँ को सब कुछ बताया तो माँ बोली "तो अब तू लोहार के पास जा और उसको बोलना कि वह उस कुल्हाड़ी को खूब हथौड़े मारे।"

सो वह लड़का लोहार के पास गया और उससे बोला — "ओ लोहार, आ कर कुल्हाड़ी को हथौड़े से मार क्योंकि कुल्हाड़ी बैल का जुआ नहीं काटती, जूआ बैल की गरदन पर नहीं बैठता।

बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

लोहार बोला — "नहीं, मैं केवल कुल्हाड़ी को हथौड़ा मारने के लिये अपना हथौड़ा गरम करने के लिये कोयला नहीं फूँकता। तुम जाओ मैं नहीं आता।"

यह सुन कर लड़का फिर अपनी माँ के पास गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो अब तू रस्सी के पास जा और उसको बोलना कि वह लोहार को फाँसी पर लटका दे।"

सो वह लड़का रस्सी के पास गया और उससे बोला — "ओ रस्सी, आ कर लोहार को फाँसी पर लटका दे क्योंकि लोहार कुल्हाड़ी को हथौड़े से नहीं मारता, कुल्हाड़ी बैल का जुआ नहीं काटती, जूआ बैल की गरदन पर नहीं बैठता।

बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

रस्सी बोली — "नहीं नहीं, इस काम के लिये मैं दो हिस्सों में नहीं बॅटने वाली। तुम जाओ मैं नहीं आती।"

यह सुन कर लड़का फिर अपनी माँ के पास गया और जा कर उसको बताया तो माँ बोली "तो अब तू चुहिया के पास जा और उसको बोलना कि वह रस्सी को कुतर दे।"

सो वह लड़का चुहिया के पास गया और उससे बोला — "ओ चुहिया, आ कर रस्सी कुतर दे क्योंकि रस्सी लोहार को फाँसी नहीं लगाती, लोहार कुल्हाड़ी को हथौड़े से नहीं मारता, कुल्हाड़ी बैल का जुआ नहीं काटती।

जूआ बैल की गरदन पर नहीं बैठता, बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।"

चुहिया बोली — "नहीं, मैं इस काम के लिये अपने दाँत नहीं घिस सकती। तुम जाओ मैं नहीं आती।"

यह सुन कर लड़का फिर अपनी माँ के पास गया और जा कर माँ को बताया तो माँ बोली "तो अब तू बिल्ली के पास जा और उसको बोलना कि वह चुहिया को खा ले।"

सो वह लड़का बिल्ली के पास गया और उससे बोला — “ओ बिल्ली रानी, आ कर ज़रा इस चुहिया को तो खा ले क्योंकि यह चुहिया रस्सी नहीं कुतरती, रस्सी लोहार को फाँसी नहीं लगाती, लोहार कुल्हाड़ी को हथौड़े से नहीं मारता, कुल्हाड़ी बैल का जुआ नहीं काटती, जूआ बैल की गरदन पर नहीं बैठता।

बैल पानी नहीं पीता, पानी आग नहीं बुझाता, आग फ़र का पेड़ नहीं जलाती, फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे नहीं कुचलता।

फ़िन भेड़िये को नहीं मारता, भेड़िया लोमड़े का नहीं खाता, लोमड़ा बकरी को नहीं काटता और बकरी शाम को खाना खाने के लिये घर नहीं जाती। और मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है और मुझे खाना खाना है।”

बिल्ली बोली — “पर तुम पहले मेरे बच्चों के लिये थोड़ा सा दूध तो ला दो।”

“हाँ यह तो है। उसको उसके बच्चों के लिये दूध तो मिलना ही चाहिये।” सो उस लड़के ने उस बिल्ली को थोड़ा सा दूध ला कर दिया और बिल्ली अपने बच्चों को दूध पिला कर उस लड़के के साथ चल दी चुहिया खाने। जैसे ही चुहिया ने बिल्ली को आते देखा तो —

चुहिया रस्सी कुतरने दौड़ी
चुहिया को आता देख रस्सी लोहार को फाँसी लगाने दौड़ी
रस्सी को आता देख लोहार कुल्हाड़ी को हथौड़े से मारने दौड़ा
हथौड़े को आता देख कुल्हाड़ी बैल का जुआ काटने दौड़ी

कुल्हाड़ी को आता देख जूआ बैल की गरदन पर बैठने दौड़ा
जूए को आता देख बैल पानी पीने दौड़ा
बैल को आता देख पानी आग बुझाने दौड़ी
पानी को आता देख आग फ़र का पेड़ जलाने दौड़ी

आग को आता देख फ़र का पेड़ फ़िन के ऊपर गिर कर उसे कुचलने के लिये दौड़ा
फ़र के पेड़ को आता देख फ़िन भेड़िये को मारने के लिये दौड़ा
फ़िन को आता देख भेड़िया लोमड़े को खाने दौड़ा
भेड़िये को आता देख लोमड़ा बकरी को काटने दौड़ा।

और लोमड़े को आता देख बकरी शाम का खाना खाने के लिये घर दौड़ गयी।

पर इस दौड़ में बकरी की एक टाँग टूट गयी। वह चिल्लायी — “मैं मैं।” और वहीं लेट गयी। और अगर वह मर नहीं गयी है तो वह अभी भी तीन टाँगों पर लँगड़ा कर चल रही होगी।

पर ऐस्पैन का कहना है उसके साथ यह सब जो कुछ भी हुआ अच्छा ही हुआ क्योंकि अगर उसके साथ ऐसा न हुआ होता तो उस दिन शायद वह रात को खाने के लिये आती ही नहीं। और फिर उसे भी भूखा ही रह जाना पड़ता।

अब कम से कम उसको खाना तो मिल रहा है।

11 पिटिड्डा[31]

बिल्ला और चुहिया जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक माँ थी जिसके एक बेटी थी। उस बेटी का नाम था पिटिड्डा। एक दिन माँ ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी ज़रा घर साफ कर दे।"

बेटी बोली — "माँ पहले मुझे रोटी दे मुझे बहुत भूख लगी है।"

माँ बोली — "मैं अभी तुझे रोटी नहीं दे सकती।"

जब माँ ने देखा कि यह लड़की घर साफ नहीं कर रही तो उसने भेड़िये को बुलाया और उससे कहा — "भेड़िये तू आ कर पिटिड्डा को खा ले क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

भेड़िया बोला — "मैं पिटिड्डा को नहीं खा सकता।"

यह देख कर माँ ने कुत्ते से कहा — "आ रे कुत्ते तू आ, तू आ कर इस भेड़िये को खा ले। क्योंकि भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

कुत्ता बोला — "मैं भेड़िये को नहीं खा सकता।"

---

[31] Pitidda – a folktale from Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885.
Hindi translation of 125 tales out of 200 are available from hindifolktales@gmail.com

इस पर माँ ने डंडे को बुलाया और उससे कहा — “आ रे डंडे आ और आ कर इस कुत्ते को मार। क्योंकि कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।”

डंडा बोला — “मैं कुत्ते को नहीं मार सकता।”

माँ ने फिर आग से कहा — “तब आ री आग तू आ। तू आ कर इस डंडे को जला दे क्योंकि डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।”

आग बोली — “मैं डंडे को नहीं जला सकती।”

माँ बोली — “तो पानी आ कर तुझे बुझा जायेगा। आ रे पानी इधर आ और आ कर इस आग को बुझा जा क्योंकि आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।”

पानी बोला — “मैं आग नहीं बुझा सकता।”

माँ बोली — “तो गाय आ कर तुझे पी जायेगी। आ री गाय आ और इस पानी को पी जा क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

गाय बोली — "मैं पानी नहीं पी सकती।"

माँ बोली — "तो रस्सी आ कर तेरा गला घोट देगी। आ री रस्सी आ और आ कर गाय का गला घोट दे क्योंकि गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

रस्सी बोली — "मैं गाय का गला नहीं घोट सकती।"

माँ बोली — "तो चूहा आ कर तुझे काट देगा। आ रे चूहे आ और आ कर रस्सी काट जा क्योंकि रस्सी गाय का गला नहीं घोटती, गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

चूहा बोला — "मैं रस्सी को नहीं काट सकता।"

माँ बोली — "तो बिल्ली आ कर तुझे खा जायेगी। आ री बिल्ली आ और आ कर इस चूहे को खा ले क्योंकि चूहा रस्सी नहीं

काटता, रस्सी गाय का गला नहीं घोटती, गाय पानी नहीं पीती, पानी आग नहीं बुझाता।

आग डंडे को नही जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं मारता, कुत्ता भेड़िये को नहीं खाता, भेड़िया पिटिड्डा को नहीं खाता, क्योंकि पिटिड्डा मेरा घर साफ नहीं करती।"

यह सुन कर बिल्ली चूहा खाने भागी
बिल्ली को आता देख कर चूहा रस्सी काटने भागा
चूहे को आता देख कर रस्सी गाय का गला घोटने भागी
रस्सी को आता देख कर गाय पानी पीने भागी

गाय को आता देख कर पानी आग बुझाने के लिये भागा
पानी को आता देख कर आग डंडे को जलाने के लिये भागी
आग को आता देख कर डंडा कुत्ते को मारने भागा
डंडा आता देख कर कुत्ता भेड़िये को खाने भागा
कुत्ते को आता देख कर भेड़िया पिटिड्डा को खाने भागा।

और भेड़िये को आता देख कर पिटिड्डा घर साफ करने भागी और जब पिटिड्डा ने घर साफ कर लिया तब उसकी माँ ने उसको खाने के लिये रोटी दी।

कहा न मानने वाला बेटा

यह कहानी नैपिल्स[32] में भी कही जाती है। उस कहानी में एक माँ अपने बेटे को जानवरों के लिये चारा लाने के लिये भेजना चाहती है पर वह जब तक नहीं जाना चाहता जब तक कि उसकी माँ उसको मैकेरोनी नहीं देती जो उसने तभी तभी पकायी है।

इस पर वह उसके लिये कुछ मैकेरोनी बचा कर रखने का वायदा करती है और वह जानवरों के लिये चारा लाने चला जाता है। उसके जाने के बाद वह करीब करीब सारी मैकेरोनी खा जाती है। अपने बेटे के लिये बहुत थोड़ी सी मैकेरोनी छोड़ती है।

जब उसका बेटा जानवरों का चारा ले कर घर लौटता है तो वह उस थोड़ी सी मैकेरोनी को देख कर बहुत रोता है और उसको खाने से मना कर देता है।

तब उसकी माँ डंडे को आग को पानी को बैल को रस्सी को चूहे को बिल्ली को उसको अपना कहा मानने के लिये बुलाती है। और तब जा कर उसका बेटा मैकैरोनी खाता है।

यह कहानी इटली के सियना और फ्लौरैन्स[33] शहरों में भी करीब करीब इसी तरीके से कही सुनी जाती है।

---

[32] Naples is the port city on the Southern-West coast of Italy.

[33] Both Sienna and Florence cities are in Italy itself.

इटली के वेनिस शहर में कही सुनी जाने वाली लोक कथा में एक शैतान लड़का स्कूल नहीं जाता तो उसकी मॉ कुत्ता डंडा आग पानी बैल कसाई और सिपाही को बुलाती है।

12 गोसो मास्टर जी[34]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप समूह में कही सुनी जाती है।

एक बार गोसो नाम का एक आदमी था जो बच्चों को स्कूल में नहीं बल्कि एक कैलेबाश[35] के पेड़ के नीचे पढ़ाया करता था।

एक शाम वह पेड़ के नीचे बैठा हुआ था और बच्चों को पढ़ाने के लिये अपना अगले दिन का पाठ तैयार कर रहा था कि पा हिरन[36] उस पेड़ के फल चुराने के लिये उस पेड़ पर बहुत जल्दी से चढ़ गया।

फल तोड़ते समय उससे एक कैलेबाश नीचे गिर गया। वह कैलेबाश मास्टर जी के सिर पर गिरा और उससे मास्टर जी मर गये।

जब अगली सुबह मास्टर जी के शिष्य आये तो उन्होंने देखा कि मास्टर जी तो मरे पड़े हैं। वे सब बहुत दुखी हुए। उन्होंने

---

[34] The Goso, the Teacher – a folktale of Zanzibar, Tanzania, Africa.
Taken from the book : "Zanzibar Tales: told by natives of the East coast of Africa" written by various authors in Swahili and translated by George W Bateman in English. Chicago, AC McClurg. 1901. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[35] Calabash is a dried outer cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet thongs. See the picture of such a tree above.

[36] Translated for the word "Gazelle" – a kind of deer. "Paa" is his name.

मास्टर जी को बड़ी शान से दफनाया पर साथ में उन्होंने यह भी फैसला किया कि वे यह भी पता लगा कर रहेंगे कि उनके मास्टर जी को किसने मारा।

काफी बातचीत के बाद उनको लगा कि दक्षिणी हवा उनके मास्टर जी की मौत के लिये जिम्मेदार थी। सो उन्होंने दक्षिणी हवा को पकड़ लिया और उसको खूब पीटा।

लेकिन दक्षिणी हवा चिल्लायी — "मैं कूसी हूँ दक्षिणी हवा[37]। तुम लोग मुझे क्यों पीट रहे हो, मैंने क्या किया है?"

वे बोले — "हाँ हाँ हम जानते हैं कि तुम दक्षिणी हवा कूसी हो पर वह तुम ही हो जिसने हमारे मास्टर जी के सिर पर कैलेबाश फेंका जिससे वह मर गये।"

पर कूसी दक्षिणी हवा बोली — "अगर मैं इतनी ताकतवर होती कि तुम्हारे मास्टर जी पर कैलेबाश फेंक सकती तो क्या मुझे एक मिट्टी की दीवार रोक सकती थी?"

"यह तो तुम ठीक कह रही हो।" सो वे मिट्टी की दीवार के पास गये और उसको जा कर पीटने लगे।

वह मिट्टी की दीवार बोली — "अरे मैं कीयाम्बाजा हूँ – मिट्टी की दीवार। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो। मैंने क्या किया है?"

वे बोले — "हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम कीयाम्बाजा हो – मिट्टी की दीवार। पर वह तुम ही हो जिसने कूसी दक्षिणी हवा को

---

[37] Here are some names – Koosee, the Southern Wind; Keeyaambaaja, the Mud Wall; Paanya, the Rat

रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया, जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

लेकिन कीयाम्बाजा दीवार बोली — "अगर मैं इतनी ताकतवर होती जो कूसी हवा को रोक सकती तो क्या मुझे कोई चूहा खोद सकता था?"

शिष्यों ने सोचा बात तो यह यह ठीक ही कह रही है सो वे चूहे के पास पहुँचे और उसे पीटना शुरू कर दिया। पर वह चूहा चिल्लाया — "अरे अरे, मैं पान्या हूँ, पान्या चूहा[38]। मैंने क्या किया है। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो?"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम पान्या चूहा हो। पर तुमने कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद किया है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका। और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पान्या बोला — "ज़रा सोचो, अगर मैं इतना ताकतवर होता कि कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद कर सकता तो क्या बिल्ला मुझे खा सकता था?"

मास्टर जी के शिष्यों ने सोचा कि यह बात तो यह पान्या चूहा ठीक ही कह रहा है सो वे बिल्ले को ढूँढने निकले। उन्होंने बिल्ले को ढूँढा और उसको पीटना शुरू कर दिया।

---

[38] Paanya Rat

पाका बिल्ला[39] बोला — "अरे यह क्या कर रहे हो? मैं तो पाका बिल्ला हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम मुझे क्यों मार रहे हो?"

शिष्यों ने कहा — "हाँ हाँ हम जानते हैं कि तुम पाका बिल्ला हो। पर वह तुम ही हो जो पान्या चूहे को खाते हो। पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका, और फिर कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पाका बिल्ला बोला — "सोचो तो अगर मैं इतना ताकतवर होता जो पान्या चूहे को खा सकता होता तो क्या मैं रस्से से बाँधा जा सकता था?"

शिष्यों ने सोचा कि यह बिल्ला तो ठीक ही कह रहा है सो वे रस्से की खोज में चल दिये। जब उनको रस्सा मिल गया तो उन्होंने उस रस्से को पीटना शुरू कर दिया।

काम्बा रस्सा[40] बोला — "अरे अरे तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं काम्बा रस्सा हूँ। मुझे बताओ तो कि मैंने किया क्या है।"

---

[39] Paaka, the Cat

[40] Kamba Rope

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम काम्बा रस्सा हो। पर वह तुम ही हो जो पाका बिल्ले को बॉधते हो। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका, और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

काम्बा रस्सा बोला — "अगर मैं इतना ताकतवर होता जो पाका बिल्ले को बॉध सकता होता तो क्या कीसू चाकू[41] मुझे काट सकता था?"

शिष्यों ने सोचा यह तो ठीक ही बोल रहा है सो वे चाकू की खोज में चल दिये। जब उनको चाकू मिल गया तो उन्होंने चाकू को पीटना शुरू कर दिया।

कीसू चाकू चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो? मुझे क्यों पीट रहे हो? मैं कीसू चाकू हूँ मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम कीसू चाकू हो। पर वह तुम ही हो न जो काम्बा रस्से को काटते हो। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा

[41] Keesoo Knife

दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

कीसू चाकू बोला — "अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो मैं काम्बा रस्सा काट सकता होता तो क्या मुझे आग जला सकती थी?"

शिष्यों ने सोचा कि कीसू कह तो ठीक ही रहा है इसका कोई कुसूर नहीं है सो वह आग ढूँढने चल दिये। जैसे ही उनको आग मिली उन्होंने उसको पीटना शुरू कर दिया।

मोटो आग[42] चिल्लायी — "भाइयो मैं तो मोटो आग हूँ तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम मोटो आग हो। पर वह तुम ही तो हो जो कीसू चाकू को जलाती हो। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

[42] Moto Fire

मोटो आग बोली — “अगर मैं इतनी ताकतवर होती कि मैं कीसू चाकू को जला सकती तो क्या मैं पानी से बुझायी जा सकती थी?”

शिष्यों ने सोचा मोटो आग ठीक बोल रही है उसकी कोई गलती नहीं है सो वे पानी की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको पानी मिला तो उन्होंने पानी को पीटना शुरू कर दिया।

माजी पानी[43] चिल्लाया — “अरे भाइयों मुझको क्यों पीटते हो? मैं माजी पानी हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?”

शिष्य बोले — “हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम माजी पानी हो। पर वह तुम ही हो जो मोटो आग को बुझाते हो। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।”

माजी पानी बोला — “ज़रा सोचो, अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो मोटो आग को बुझा सकता तो क्या गोम्बे बैल[44] मुझे पी सकता था?”

---

[43] Maajee Water, Ngombay Ox

शिष्यों ने सोचा यह माजी पानी तो बिल्कुल ठीक बोल रहा है सो वह बैल की खोज में चल दिये। जब उनको बैल मिल गया तो उन्होंने बैल को मारना शुरू कर दिया।

इस पर बैल चिल्ला पड़ा — "अरे भाइयों तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं तो गोम्बे बैल हूँ।"

शिष्य बोले — "हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम गोम्बे बैल हो पर वह तुम ही हो जो माजी पानी को पीते हो। माजी पानी मोटो आग बुझाता है। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

गोम्बे बैल बोला — "ज़रा सोचो अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो माजी पानी को पी सकता तो क्या कोई मक्खा मुझे तंग कर सकता था?"

शिष्यों ने सोचा कि बात तो यह गोम्बे बैल ठीक ही कह रहा है हम इसको बेकार ही मार रहे हैं सो वे मक्खे की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको मक्खा मिला उन्होंने उसको पीटना शुरू कर दिया।

---

[44] Gombe Ox

ईन्ज़ी मक्खा[45] बोला — "भाइयों मुझको क्यों पीट रहे हो? मैं तो ईन्ज़ी मक्खा हूँ। मैंने क्या किया?"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हमें मालूम है कि तुम ईन्ज़ी मक्खा हो। पर वह तुम ही तो हो जो गोम्बे बैल को तंग करते हो। गोम्बे बैल माजी पानी को पीता है। माजी पानी मोटो आग बुझाता है।

मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा ने मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

ईन्ज़ी मक्खा बोला — "भाइयो ज़रा सोचो तो अगर मैं इतना ही ताकतवर होता कि मैं गोम्बे बैल को तंग कर सकता होता तो क्या हिरन मुझे खा सकता था?"

शिष्यों को लगा कि वे तो ईन्ज़ी मक्खे को बेकार में ही पीट रहे हैं वह तो बिल्कुल ही बेकुसूर है सो वे हिरन की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको हिरन मिला बस उन्होंने पा हिरन को पीटना शुरू कर दिया।

[45] Eenzee fly

पा हिरन चिल्लाया — "अरे मैं तो पा हिरन हूँ। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हाँ हम जानते हैं कि तुम पा हिरन हो पर तुम ही तो वह हो जो ईन्ज़ी मक्खे को खाते हो। ईन्ज़ी मक्खा गोम्बे बैल को तंग करता है। गोम्बे बैल माजी पानी को पीता है।

माजी पानी मोटो आग बुझाता है। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा ने मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे गोसो मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पा हिरन ने सोचा अब तो वह पकड़ा गया। जब वह कैलेबाश के पेड़ पर फल चुराने गया था तब उससे मास्टर जी की अनजाने में मौत हो गयी थी सो वह तो बिल्कुल ही चुप खड़ा रह गया।

शिष्य बोले — "अब तुम्हारे पास अपने बचाव में कुछ कहने को नहीं है पा हिरन। वह तुम ही हो जिसने कैलेबाश नीचे फेंका जिसकी चोट से हमारे मास्टर जी मर गये।"

बस उन्होंने उस पा हिरन[46] को पीट पीट कर मार डाला और इस तरह से शिष्यों ने अपने मास्टर जी की मौत का बदला ले लिया।

[46] Translated for the word “Gazelle”. He has a special kind of horns. See the picture above.

13 बन्दर की पूँछ अभी भी क्यों[47]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की कहानियों से ली है। इस कहानी में देखने वाली बात यह है कि बन्दर ने अपनी पूँछ कैसे खोयी और फिर कैसे उसको वापस पायी।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक बन्दर और एक खरगोश ने आपस में समझौता किया कि बन्दर तितलियाँ मारेगा और खरगोश साँप मारेगा।

एक दिन खरगोश सो रहा था कि बन्दर उधर से गुजरा। उसको देख कर उसको लगा कि वह उसके साथ कोई चाल खेले। उसने खरगोश के कान ऐसे खींचे जैसे वह कोई तितली पकड़ रहा हो।

इससे खरगोश जाग गया। जब उसने देखा कि वह बन्दर था तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो बन्दर ने जवाब दिया कि उसने सोचा कि वे तितलियाँ थीं।

---

[47] Why the Monkey Still Has a tail – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_18.html
These tales appear in a Book : "Fairy Tales From Brazil", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. How and Why Tales from Brazilian Folklore. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

पर फिर भी खरगोश का गुस्सा नहीं गया। उसने भी सोच लिया कि वह भी बन्दर से इसका बदला लेगा। बस अब वह यह सोचने लगा कि वह उससे इसका बदला कैसे ले।

खरगोश का एक और बहुत अच्छा दोस्त था। वह था अरमाडिलो[48]।

अरमाडिलो बहुत ही ताकतवर जानवर होता है सो खरगोश ने उसी से सहायता लेने का इरादा किया।

खरगोश भी यह बदला उस समय लेना चाहता था जब बन्दर सो रहा हो। अब बन्दर भी कभी तो सोता ही है तो एक दिन खरगोश ने बन्दर को सोते हुए पकड़ लिया।

पहले तो खरगोश उसको बहुत देर तक देखता रहा कि वह कब सोये कब सोये। इसके लिये उसको बन्दर के सोने का बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ा। आखिर बन्दर सो गया।

जैसे ही बन्दर सो गया खरगोश अरमाडिलो के पास भागा भागा गया और उसको वहाँ बुला लाया जहाँ बन्दर सो रहा था। दोनों ने मिल कर एक भारी सा पत्थर बन्दर की पूँछ के ऊपर खिसका दिया।

कुछ देर बाद जब बन्दर की आँख खुली तो उसने उठना चाहा पर उसकी पूँछ तो पत्थर के नीचे दबी हुई थी वह कैसे उठता। सो उठने के लिये उसने अपनी पूँछ खींची तो वह टूट गयी।

---

[48] Armadillo. See its picture above

उस समय बिल्ली की अपनी कोई पूँछ नहीं थी। उसको बन्दर की वह पूँछ पत्थर के नीचे दबी हुई दिखायी दे गयी तो उसने उसकी वह पूँछ पत्थर के नीचे से निकाल ली और उसको ले कर भाग गयी।

जब बन्दर को यह पता चला कि यह सब खरगोश का काम था तो वह खरगोश पर बहुत गुस्सा हुआ।

खरगोश बोला — "मुझे लगा कि वहाँ कोई साँप पड़ा है। जब तुमने मेरे कान खींचे थे तब तुम्हें याद है कि तुमने क्या कहा था? कि तुमको लगा कि तुम तितली पकड़ रहे हो। भूल गये।"

पर इससे बन्दर का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ। अब वह अपनी पूँछ के बिना कैसे रहेगा। उसको तो अपनी पूँछ वापस चाहिये ही थी। अपनी पूँछ लेने के लिये वह तुरन्त ही बिल्ली को ढूँढने निकल पड़ा।

काफी ढूँढने के बाद उसको बिल्ली मिल गयी। उसने बिल्ली से कहा — "ओ बिल्ली, जो पूँछ तुम ले गयी थीं वह पूँछ मेरी है। मेहरबानी कर के मेरी पूँछ वापस कर दो। मैं बिना अपनी पूँछ के नहीं रह सकता।"

बिल्ली बोली — "बन्दर भाई मैं तुम्हारी पूँछ वापस तो कर दूँगी पर पहले मुझे तुम थोड़ा सा दूध ला दो।"

बन्दर बोला — "पर मैं दूध कहाँ से लाऊँ?"

बिल्ली बोली — "तुम किसी गाय के पास चले जाओ वह तुम्हें दूध दे देगी।"

सो बन्दर गाय को ढूँढने चला। गाय के पास पहुँच कर उसने गाय से कहा — "ओ दयालु गाय, क्या तुम मुझे थोड़ा सा अपना दूध दोगी जिसको ले जा कर मैं बिल्ली को दे सकूँ। ताकि वह मुझे मेरी पूँछ वापस दे सके।"

गाय बोली — "मैं तुम्हें दूध तो दे दूँगी अगर तुम मुझे घास ला कर दे दोगे तो।"

बन्दर ने पूछा — "और यह घास मुझे कहाँ मिलेगी?"

गाय बोली — "जा कर किसान से पूछो।"

सो बन्दर किसान को ढूँढने चल दिया। किसान के मिलने पर उसने उससे कहा — "ओ दयालु किसान, क्या तुम मुझे थोड़ी सी घास दोगे जिसको ले जा कर मैं गाय को दे सकूँ। ताकि गाय मुझे दूध दे सके जिसको ले जा कर में बिल्ली को दे सकूँ। ताकि बिल्ली मुझे मेरी पूँछ वापस कर सके।"

किसान बोला — "मैं तुमको घास दे तो दूँगा पर पहले तुम मुझे बारिश ला कर दो।"

बन्दर बोला — "पर मैं बारिश कहाँ से लाऊँ?"

किसान बोला — "जा कर बादलों से बात करो।"

बेचारा बन्दर बादलों के पास चल दिया। बादलों के पास पहुँच कर उसने बादलों से कहा — "ओ दयालु बादलों, क्या तुम मुझे थोड़ी सी बारिश दोगे जिसको ले जा कर मैं किसान को दे सकूँ?

ताकि किसान मुझे घास दे सके जिसे ले जा कर में गाय को दे सकूँ। ताकि गाय मुझे दूध दे सके जिसको ले जा कर में बिल्ली को दे सकूँ। ताकि बिल्ली मेरी पूँछ मुझे वापस कर सके।"

बादल बोला — "मैं तुमको बारिश तो दे दूँगा पर पहले तुम मुझे कोहरा ला कर दो।"

बन्दर बोला — "पर मुझे कोहरा कहाँ मिलेगा?"

बादल बोला — "जा कर नदियों से पूछो।"

सो बन्दर अब नदी के पास चल दिया। नदी के पास आ कर उसने उससे कहा — "ओ दयालु नदी, क्या तुम मुझे थोड़ा सा कोहरा दोगी जिसको ले जा कर मैं बादल को दे सकूँ।

बादल मुझे बारिश देंगे जो मैं किसान को ले जा कर दूँगा। ताकि किसान मुझे घास दे सके जिसे ले जा कर मैं गाय को दूँगा। ताकि गाय मुझे दूध दे सके जिसको ले जा कर में बिल्ली को दूँगा। ताकि बिल्ली मेरी पूँछ मुझे वापस कर सके।"

नदी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मै तुम्हें कोहरा जरूर दूँगी पर पहले तुम मुझे बढ़ने के लिये पानी की एक नयी धारा ला कर दो।"

बन्दर बोला — "और मुझे यह पानी की धारा कहाँ मिलेगी?"

नदी बोली — "तुम उसको पहाड़ों में जा कर ढूँढो।"

यह सुन कर बन्दर पहाड़ों की तरफ चल दिया। वहाँ वह बहुत देर तक पानी की धारा ढूँढता रहा। आखिर उसको नदी को बढ़ाने के लिये पानी की एक छोटी सी धारा मिल ही गयी। वह उस पानी की धारा को ले कर नदी को देने के लिये ले आया।

वह पानी की धारा ला कर उसने नदी को दी तो नदी ने उसको कोहरा दिया।

वह कोहरा ले जा कर उसने बादलों को दिया तो बादलों ने उसे बारिश दी।

वह बारिश ले जा कर उसने किसान को दी तो किसान ने उसे घास दी।

वह घास ले जा कर उसने गाय को दी तो गाय ने उसे दूध दिया।

वह दूध ले जा कर उसने बिल्ली को दिया तब कहीं जा कर बिल्ली ने उसको उसकी पूँछ वापस की।

पूँछ पा कर बन्दर तो बहुत ही खुश हो गया। वह तो गाने नाचने लगा। फिर उसने अपनी पूँछ अपने पिछवाड़े लगा ली।

14 खरगोश ने अपनी पूँछ कैसे खोयी[49]

बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका के ब्राज़ील देश की कहानियों से ली है। इस कहानी में तुम्हें पता चलेगा कि खरगोश के पूँछ क्यों नहीं है।

यह बहुत बहुत बहुत समय पहले की बात है जब खरगोश के भी एक लम्बी सी पूँछ हुआ करती थी पर उस समय बिल्ली के पूँछ नहीं होती थी।

वह खरगोश की लम्बी सी पूँछ देख कर उससे बहुत जलती थी। असल में उसको वैसी ही एक बहुत लम्बी पूँछ चाहिये थी और वह उसके थी नहीं। उधर खरगोश हमेशा से ही एक लापरवाह जानवर था। वह किसी भी बात को बिल्कुल भी नहीं सोचता था।

एक दिन खरगोश सोने गया तो उसकी सुन्दर लम्बी पूँछ उसके पीछे फैली पड़ी थी। मिस बिल्ली ने जब यह देखा तो उसके मन में एक विचार आया और वह तुरन्त ही एक तेज़ चाकू ले कर वहाँ आयी जहाँ वह खरगोश सोया हुआ था।

---

[49] How the Rabbit Lost His Tail – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_6.html
These tales appear in a Book : "Fairy Tales From Brazil", by Elsie Spicer Eells. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. How and Why Tales from Brazilian Folklore. 18 Tales. This book is given at the above Web Site.

बस उसने एक ही झटके में खरगोश की वह सुन्दर पूँछ काट ली। मिस बिल्ली बहुत होशियार थी। इससे पहले कि खरगोश यह देखता कि मिस बिल्ली ने उसके साथ क्या किया मिस बिल्ली ने वह पूँछ अपने शरीर पर सिल ली।

जब खरगोश जागा तो मिस बिल्ली ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या लगता है कि यह पूँछ तुम्हारे ऊपर की बजाय मुझ पर ज़्यादा अच्छी नहीं लग रही?"

दयालु खरगोश बोला — "हाँ यह तो तुम ठीक कह रही हो। यह तो तुम पर बहुत ही अच्छी लग रही है। यह मेरे लिये कुछ ज़्यादा लम्बी भी थी। और अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं अब क्या करूँगा। मैं अब इसको तुम्हें ही रखने दूँगा अगर तुम मुझे अपना तेज़ चाकू मुझे दे दो तो।"

मिस बिल्ली को इसमें कोई एतराज नहीं था सो उसने वह चाकू खरगोश को दे दिया। वह चाकू ले कर खरगोश जंगल में अन्दर की तरफ भाग गया।

वह चिल्लाता जा रहा था — "मैंने अपनी पूँछ तो खो दी है पर मुझे चाकू मिल गया है। अब मेरे या तो नयी पूँछ आ जायेगी या फिर उससे भी अच्छी कोई और चीज़ मुझे मिल जायेगी।

मिस्टर खरगोश उस जंगल में बहुत देर तक कूदता फिरा कि आखिर वहाँ उसको एक बूढ़ा मिल गया जो टोकरियाँ बना रहा था।

वे टोकरियाँ वहाँ वह वहीं की उगी घास फूस से बना रहा था और वह घास अपने दाँत से काटता जा रहा था।

उसने ऊपर देखा तो उसको अपने मुँह में चाकू दबाये हुए एक खरगोश दिखायी दे गया। उसने खरगोश से कहा — "ओ खरगोश भाई क्या तुम मेहरबानी कर के मुझे अपना यह तेज़ चाकू मुझे दोगे? अपने दाँतों से बार बार यह घास काटना तो बहुत मुश्किल काम है।"

सो खरगोश ने उसको वह चाकू दे दिया और उसने वह घास उस चाकू से काटनी शुरू कर दी। पर उसने एक बार घास में चाकू मारा और "फट" और वह चाकू दो हिस्सों में टूट गया।

खरगोश चिल्लाया — "ओह ओह मेरे भगवान। अब मैं क्या करूँ अब मैं क्या करूँ? तुमने तो मेरा नया चाकू ही तोड़ दिया।"

बूढ़ा बोला कि उसको खरगोश के चाकू के टूट जाने का बहुत दुख था पर उसको तोड़ने का उसका कोई इरादा नहीं था।

खरगोश बोला — "अब इस टूटे हुए चाकू का तो मैं कुछ कर नहीं सकता पर तुम इसको शायद अभी भी इस्तेमाल कर सकते हो। सो यह चाकू तुम रख सकते हो अगर तुम इसके बदले में मुझे एक टोकरी दे दो।"

बूढ़े ने टूटा हुआ चाकू अपने पास रख लिया और खरगोश को एक टोकरी दे दी। खरगोश ने टोकरी ली और फिर जंगल में भागा चला गया।

वह गाता जा रहा था — "मैंने अपनी पूँछ खोयी पर मुझे एक चाकू मिल गया। मैंने चाकू खोया पर मुझे एक टोकरी मिल गयी। अब या तो मेरे एक नयी पूँछ आ जायेगी और या फिर वैसी ही कोई और अच्छी चीज़ मिल जायेगी।"

भागते भागते गाते गाते वह जंगल में एक खाली जमीन पर आ गया। वहाँ एक स्त्री लैटस[50] इकट्ठा कर रही थी। जब उसने अपनी लैटस इकट्ठी कर लीं तो उसने उनको अपने ऐप्रन में रख लीं।

उनको अपने ऐप्रन में रख कर उसने ऊपर देखा तो उसको खरगोश दिखायी दे गया। उसने उससे कहा — "खरगोश भाई क्या तुम मेहरबानी कर के मुझे अपनी टोकरी उधार दोगे? मेरे ऐप्रन में तो बहुत कम लैटस आती है इस टोकरी में मैं ज़्यादा लैटस इकट्ठी कर पाऊँगी। "

खरगोश ने अपनी टोकरी उसको दे दी। उसने अपनी लैटस उस टोकरी में रखनी शुरू कर दीं। जब उसने वे लैटिस उस टोकरी में रख लीं तो जैसे ही उसने उस टोकरी को उठाया तो उस टोकरी का तला निकल गया और वह टोकरी टूट गयी।

खरगोश चिल्लाया — "ओह यह टोकरी तो टूट गयी अब मैं क्या करूँ। तुमने तो मेरी इतनी अच्छी नयी टोकरी की तली ही तोड़ दी।"

[50] Lettuce is cabbage-like vegetable which is normally eaten as salad. See its picture above.

बुढ़िया को यह देख कर बहुत दुख हुआ। वह बोली — "खरगोश भाई मुझे तुम्हारी टोकरी टूट जाने का बहुत अफसोस है पर मेरा उसे तोड़ने का कोई इरादा नहीं था।"

खरगोश बोला — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं अब क्या करूँगा। मैं तुम्हें यह टूटी हुई टोकरी रखने दूँगा अगर तुम मुझे अपनी कुछ लैटस दे दोगी।"

बुढ़िया बेचारी ने खरगोश की टूटी हुई टोकरी रख ली और उसको अपनी कुछ लैटस दे दीं और खरगोश उनको ले कर वहाँ से फिर कूदता गाता जंगल में भाग गया।

"मैंने अपनी पूँछ खोयी पर मुझे एक चाकू मिल गया। मैंने चाकू खोया पर मुझे एक टोकरी मिल गयी। मैंने टोकरी खोयी पर मुझे लैटस मिल गयीं। अब या तो मेरे नयी पूँछ आ जायेगी और या फिर मुझे वैसी ही कोई और अच्छी चीज़ मिल जायेगी।"

अब तक भागते भागते खरगोश बहुत थक गया था। साथ में उसको भूख भी लग आयी थी। उसकी लैटस में से भी बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी।

उसने लैटस में से एक कौर खाया तो वह तो उसको बहुत ही स्वाद लगी। इतनी स्वाद चीज़ तो उसने इससे पहले कभी खायी ही नहीं थी।

उसको खा कर वह बोला — “मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं कि मैंने अपनी पूँछ खोयी क्योंकि अब मुझे एक ऐसी चीज़ मिल गयी जो मुझे अपनी पूँछ से भी ज़्यादा पसन्द है।”

उस दिन के बाद से खरगोश के कभी पूँछ ही नहीं हुई और न ही कोई खरगोश ही ऐसा पैदा हुआ जिसको लैटस पसन्द न होती हो। कितनी भी लैटस हो वह उसके लिये कम ही है।

15 टिड्डा और चींटा[51]

बिल्ले और चुहिया जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी यूरोप के जियोर्जिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक टिड्डे और एक चींटे की दोस्ती हो गयी। उस दोस्ती में उन्होंने आपस में वायदा किया कि वे हमेशा एक साथ रहेंगे कभी अलग नहीं होंगे।

एक बार वे लोग एक सफर पर निकले। उस समय वे यह एक पुरानी और मशहूर कहावत भूल गये कि गाड़ीवान और गाड़ी के पीछे खड़े होने वाला कभी एक दूसरे के साथी नहीं हो सकते।

पर इस सचाई का सबूत तो उनको अपने सफर के पहले दिन ही मिल गया। क्योंकि चलते चलते उनके रास्ते में एक नदी पड़ी जिसको उन दोनों को पार करना था। तो टिड्डा तो उसके उस पार कूद गया और चींटी बेचारी नदी के बहाव में बह गयी।

टिड्डे ने एक पल के लिये सोचा कि वह अपने डूबते हुए साथी को कैसे बचा सकता था। फिर वह चिल्लाया — "तुम तब तक किसी चीज़ को पकड़ कर रखो मैं अभी तुम्हारे लिये सहायता ले कर आता हूँ।"

---

[51] The Grasshopper and the Ant – Gurian Tales – a folktale from Georgia, Europe. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

असल में यह शानदार विचार तो उसको सूअर के कान में लगे एक काँटे को देख कर आया ताकि वह चींटा उसको पकड़ सके और वह फिर उसको पानी के बाहर खींच सके।

सूअर बोला — "टिड्डे भाई तुमको वह कहावत तो पता है न कि हाथ को हाथ ही धोता है। मैंने तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। तो क्या मैं अपना काँटा किसी को ऐसे ही निकालने दूँगा। तुम मुझे ओक के फल[52] खिलाओ तब तुम मेरे जितने चाहो उतने काँटे ले सकते हो।"

टिड्डा भागा भागा ओक के पेड़ के पास गया और बोला — "ओक ओक मुझे अपने कुछ फल दो। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।

ओक बोला — "ये चोर जे चिड़ियें मुझे ज़रा सा भी आराम नहीं लेने देतीं। मेरे फल तोड़ती ही रहती हैं। पहले यहाँ से इनको भगाओ।"

टिड्डा भागा भागा जे चिड़ियों के पास गया और उनसे बोला — "ओ जे चिड़ियों यहाँ से भागो। फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर

[52] Translated for the word "Acorn". See its picture above

मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

जे चिड़ियाँ बोलीं — "काइट चिड़ियें हमारा पीछा करती हैं। तुम पहले उनको हमारा पीछा करने से रोको।"

टिड्डा भागा भागा काइट चिड़ियों के पास गया और बोला — "ओ काइट चिड़ियों तुम जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ो। तुम जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ दोगी तो जे चिड़ियें ओक के फल चुराना छोड़ देंगीं।

इससे ओक अपने कुछ फल मुझे दे देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

काइट चिड़ियें बोलीं — "हमें भूख लगी है। हमें खाने के लिये चूज़े ला कर दो।"

टिड्डा बेचारा भागा भागा मुर्गी के पास गया और बोला — "मुर्गी मुर्गी मुझे अपने बच्चे दो। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

मुर्गी बोली — "पहले मुझे बाजरा खिलाओ।"

टिड्डा भागा भागा अनाजघर के पास गया और उससे कहा — “अनाजघर मुझे थोड़ा सा बाजरा दो। यह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।”

अनाजघर बोला — “मेरे मालिक तो चूहे हैं। वे मुझे चारों तरफ से खाते रहते हैं। पहले तुम उनको भगाओ।”

टिड्डा भागा भागा चूहों के पास गया और बोला — “चूहों चूहों तुम अनाजघर में से बाजरा खाना छोड़ो। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा।

वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। बाजरा ले कर मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। तब काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। फिर जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।”

चूहे बोले — "हम क्या करें। ये बिल्लियाँ हमें चैन से नहीं रहने देतीं। पहले तुम उनको भगाओ।"

सो बेचारा टिड्डा बिल्लियों के पास गया और बोला — "ओ बिल्लियों तुम चूहों का पीछा करना छोड़ो तब चूहे अनाजघर छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

बिल्लियाँ बोलीं — "तुम हमको पहले दूध पिलाओ।"

सो टिड्डा भागा भागा गाय के पास गया और बोला — "गाय गाय मुझे दूध दे दूध दे। यह दूध ले जा कर में बिल्लियों को दूँगा। तब बिल्लियाँ चूहों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब चूहे अनाजघर से बाजरा चुराना छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

गाय बोली — "पहले मुझे घास खिलाओ।"

सो टिड्डा बेचारा जमीन के पास दौड़ा गया — "जमीन जमीन मुझे थोड़ी सी घास दे दो। यह घास ले जा कर मैं गाय को खिलाऊँगा। गाय मुझे दूध देगी।

दूध ले जा कर मैं बिल्लियों को पिलाऊँगा तो वे चूहों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब चूहे अनाजघर से बाजरा चुराना छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा तब मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा तब काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल ले जा कर सूअर को दूँगा तब सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

यह सुन कर जमीन बोली — "अरे तो तुम अपने दोस्त को बचाना चाहते हो। लो यह लो घास।" इतना कह कर जमीन ने टिड्डे को घास दी।

घास ले कर टिड्डा गाय के पास गया और उसको उसने घास खिलायी

गाय ने उसको दूध दिया जो उसने बिल्लियों को पिलाया

तब बिल्लियों ने चूहों का पीछा करना छोड़ा

तो चूहों ने अनाज घर से बाजरा चुराना छोड़ा

तब अनाज घर ने बाजरा दिया जो उसने मुर्गी को खिलाया

तब मुर्गी ने उसको अपने बच्चे दिये जो उसने काइट चिड़िया को दिये

तब काइट चिड़ियों ने जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ा

तब जे चिड़ियों ने ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ा

तब ओक के पेड़ ने टिड्डे को अपने फल दिये जो उसने ले जा कर सूअर को दिये

तब सूअर ने उसको अपना एक कॉटा दिया

वह कॉटा ले कर वह अपने डूबते दोस्त चींटी के पास पहुँचा

पर जब तक वह अपने दोस्त चींटे को बचाने के लिये कॉटा ले कर पहुँचा तब तक तो वह मर ही चुका था।

इस कहानी से हमें दो सीखें मिलती हैं कि सहायता तभी तक ठीक रहती है जब तक वह समय से पहुँचायी जा सके।

दूसरे यह कि धरती अकेली ही हमसे अपनी किसी भेंट के बदले में कुछ नहीं माँगती बाकी सब लोग कुछ न कुछ माँगते हैं।

16 एक चिड़िया और एक झाड़ी[53]

एक बार एक चिड़िया एक झाड़ी के ऊपर से उड़ी — "ओ छोटी झाड़ी मुझे थोड़ा सा झूला झुला दो।"

झाड़ी बोली — "नहीं मैं नहीं झुलाऊँगी।"

इस पर चिड़िया नाराज हो गयी। वह एक बकरी के पास गयी और उससे कहा — "तू झाड़ी को खा ले क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

बकरी ने कहा — "नहीं मैं नहीं खाऊँगी।"

तब चिड़िया एक भेड़िये के पास गयी और उससे कहा — "भेड़िये भेड़िये तू बकरी को खा ले क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

भेड़िया बोला — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

तब चिड़िया लोगों के पास गयी और उनसे कहा — "ओ भले लोगो तुम लोग भेड़िये को मार दो क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

लोगों ने कहा — "हम तो भेड़िये को नहीं मारते।"

---

[53] The Sparrow and the Bush. (Tale No 9)

सो चिड़िया टार्टर्स[54] के पास गयी और उनसे कहा — "टार्टर्स ओ टार्टर्स। तुम लोगों को मार दो क्योंकि ये लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

टार्टर्स ने कहा — "हम लोगों को नहीं मारते।"

लोगों ने कहा — "हम भेड़िये को नहीं मारते।"

भेड़िये ने कहा — "मैं बकरी को नहीं खाता।"

बकरी ने कहा — "मैं झाड़ी को नहीं खाती।

झाड़ी ने कहा — "मैं एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

झाड़ी बोली — "तुम आग के पास जाओ क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

पर आग ने भी कहा — "मैं टार्टर्स को नहीं जलाती। तुम पानी के पास जाओ।"

---

[54] Tartars – Tatar, also spelled as Tartar, any member of several Turkic-speaking peoples that collectively numbered more than 5 million in the late 20th century and lived mainly in west-central Russia along the central course of the Volga River. The name Tatar first appeared among nomadic tribes living in northeastern Mongolia and the area around Lake Baikal from the 5th century CE. Unlike the Mongols, these peoples spoke a Turkic language. After various groups of these Turkic nomads became part of the armies of the Mongol conqueror Genghis Khan in the early 13th century, a fusion of Mongol and Turkic elements took place, and the Mongol invaders of Russia and Hungary became known to Europeans as Tatars (or Tartars).

सो चिड़िया पानी के पास गयी पर पानी ने भी कहा — "मैं आग नहीं बुझाता।"

तो चिड़िया बैल के पास गयी। उसने उससे कहा — "बैल बैल। तू चल कर पानी पी ले क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

बैल बोला — "मैं पानी को नहीं पीता।"

तब चिड़िया कुल्हाड़ी के पास गयी और उससे कहा कि वह बैल को मारे क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते।

क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को नहीं झुलाती।"

कुल्हाड़ी ने कहा — "मैं बैल को नहीं मारती।"

सो चिड़िया कीड़ों के पास गयी और उनसे कहा कि वे कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स

को नहीं जलाती। क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते।

क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

कीड़ों ने भी कहा कि वे कुल्हाड़ी को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।

तब चिड़िया एक मुर्गी के पास गयी कि वह कीड़ों को खा ले क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को नुकसान नहीं पहुँचाते। क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

तब चिड़िया एक मादा बाज़ के पास गयी और उससे कहा कि वह मुर्गी को पकड़ ले क्योंकि मुर्गी कीड़ों को नहीं खाती। क्योंकि कीड़े कुल्हाड़ी को खा लें क्योंकि कुल्हाड़ी बैल को नहीं मारती। क्योंकि बैल पानी नहीं पीता। क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता। क्योंकि आग टार्टर्स को नहीं जलाती।

क्योंकि टार्टर्स लोगों को नहीं मारते। क्योंकि लोग भेड़िये को नहीं मारते। क्योंकि भेड़िया बकरी को नहीं खाता। क्योंकि बकरी झाड़ी को नहीं खाती। क्योंकि झाड़ी एक भली चिड़िया को झूला नहीं झुलाती।"

तब मादा बाज़ मुर्गी को पकड़ने को दौड़ी।
मुर्गी कीड़ों को खाने दौड़ी।
कीड़े कुल्हाड़ी को खाने दौड़े।

कुल्हाड़ी बैल को मारने दौड़ी।
बैल पानी पीने दौड़ा।
पानी आग बुझाने भागा।
आग टार्टर्स जलाने दौड़ी।

टार्टर्स लोगों को मारने भागे।
लोग भेड़िये को मारने दौड़े।
भेड़िया बकरी को खाने भागा।
बकरी झाड़ी को खाने भागी।
बकरी को आते देख झाड़ी ने एक भली चिड़िया को झूला झुलाया।"

17 एक चिड़िया और एक कौआ[55]

बिल्ला और चुहिया जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक चिड़िया और एक कौए में यह समझौता हुआ कि वे लोग अपने शाम के खाने में खिचड़ी[56] खायेंगे। सो चिड़िया चावल ले आयी और कौआ दाल ले आया। अब चिड़िया को खिचड़ी पकानी थी।

चिड़िया ने खिचड़ी पकायी। जब खिचड़ी तैयार हो गयी तो कौआ अपना हिस्सा लेने के लिये आ खड़ा हुआ।

चिड़िया ने उसकी तरफ देखते हुए डॉट कर कहा — "क्या कभी किसी ने इतने गन्दे आदमी को खाना के लिये बैठते हुए सुना है जितने कि तुम हो। तुम्हारा सारा शरीर काला है और तुम्हारा सिर तो ऐसा है जैसे कि राख से ढका हुआ हो। अपने भले के लिये पहले किसी तालाब में नहा कर आओ तब खिचड़ी खाना।"

---

[55] The Sparrow and the Crow – A folktale from Punjab, India, Asia. Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. 1894. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[56] Any kind of pulse and rice, normally in equql quantity, cooked together with some spices

चिड़िया के उसे गन्दा कहने पर कौए को थोड़ा गुस्सा आ गया पर लड़ने से तो अच्छा था कि उसकी बात मान ली जाये सो वह एक तालाब के पास गया आर उससे बोला —

आपका नाम तालाब है जनाब पर मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा पानी दीजिये
क्योंकि अगर आप मुझे पानी दे देंगे तो मैं उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
फिर मैं खिचड़ी खा सकूँगा हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

लेकिन तालाब बोला — "मैं तुम्हें पानी जरूर दूँगा। पर पहले तुम हिरन के पास जाओ और उससे उसका एक सींग माँग कर लाओ। तब तुम उससे एक सुन्दर सी छोटी सी नाली खोद सकते हो जिसमें साफ और ताजा पानी बह कर आयेगा।"

सो वह कौआ उड़ कर एक हिरन के पास पहुँचा और उससे बोला —

आपका नाम हिरन है जनाब और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे अपना एक सींग दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं उससे एक नाली खोद सकता हूँ
जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

इस पर हिरन बोला — "मैं आपको यकीनन अपना एक सींग दे दूँगा पर पहले आप किसी गाय के पास जाइये और मेरे पीने के लिये थोड़ा सा दूध ले कर आइये। उसे पी कर मैं मोटा हो जाऊँगा जिससे मुझे अपने सींग टूटने का दर्द ज़्यादा महसूस नहीं होगा।"

कौआ उड़ता हुआ एक गाय के पास पहुँचा और उससे बोला —

आपका नाम गाय है मैम और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे अपना थोड़ा सा दूध दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगी तो उसे ले जा कर हिरन को दूँगा
हिरन को उसको पी कर अपना सीग तोड़ने में कम दर्द होगा
और वह मुझे अपना सींग दे देगा

सींग से मैं एक नाली खोदूँगा जिसमें मैं पानी भरूँगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

इस पर गाय बोली — "जनाब मैं आपको दूध दे तो दूँगी पर पहले आप मेरे खाने के लिये घास ला कर दें। क्या कभी आपने किसी गाय को बिना घास खाये हुए दूध देते सुना है?"

सो कौआ उड़ता हुआ घास के पास गया और उससे बोला —

आपका नाम घास है मैम और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे थोड़ी सी घास दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगी तो मैं उसे ले जा कर मैम गाय को खाने के लिये दूँगा
मैम गाय मुझे अपना दूध देंगी जिसे पी कर हिरन मुझे अपना एक सींग देगा

सींग से मैं तालाब से एक नाली खोद सकता हूँ जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

घास बोली — "यकीनन मैं तुम्हें घास तो दे दूँगी पर पहले तुमको एक लोहार के पास जा कर एक हँसिया बनवा कर लाना पड़ेगा तभी तुम मेरी घास काट सकोगे। क्योंकि घास को अपने आप काटते किसने सुना है।"

कौआ उड़ते उड़ते एक लोहार के पास पहुँचा। उसने लोहार से कहा —

आपका नाम लोहार है जनाब और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे एक हँसिया बना दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं उससे घास काटूँगा
घास ले जा कर मैं मैम गाय को उनके खाने के लिये दूँगा
फिर मैम गाय मुझे अपना दूध देंगी जिसे पी कर हिरन मुझे अपना एक सींग देगा

सींग से मैं तालाब से एक नाली खोद सकता हूँ जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

लोहार बोला — "खुशी से जनाब। अगर आप मेरी भट्टी में आग जला दें और उसको धौंकनी से हवा दे दें तो।

सो कौए ने उसकी भट्टी में आग जलायी और धौंकनी से उस आग को हवा दे कर तेज़ किया। जब वह ऐसा कर रहा था तो वह बेचारा बीच भट्टी में जा पड़ा और जल कर मर गया।

और बस यही उसका अन्त था। चिड़िया ने सारी खिचड़ी खाली।

18 मक्का का दाना[57]

एक बार की बात है कि एक किसान की पत्नी मक्का के दाने निकाल रही थी कि एक कौआ ऊपर से उड़ता हुआ आया और उसकी टोकरी में से मक्का का एक दाना ले कर उड़ गया। वह एक पास के पेड़ पर बैठ गया और वहाँ बैठ कर उसे खाने लगा।

यह देख कर किसान की पत्नी बहुत गुस्सा हुई। उसने पास में पड़ा एक पत्थर उठाया और उसको कौए की तरफ ऐसा निशाना लगा कर मारा कि कौआ पेड़ से नीचे गिर पड़ा। और साथ में गिर पड़ा उसका मक्का का दाना। मक्का का दाना लुढ़कता हुआ पेड़ की एक झिरी में चला गया।

किसान की पत्नी ने जब देखा कि कौआ नीचे गिर पड़ा तो वह उसके पास गयी और उसकी पूँछ पकड़ कर चिल्लायी — "मेरा मक्का का दाना दे नहीं तो मैं तुझे मार दूँगी।"

वह कौआ बेचारा मरने के डर से बोला कि वह उसका मक्का का दाना वापस कर देगा। पर लो देखो जब वह दाना ढूँढने निकला तो वह तो पेड़ की झिरी में इतनी दूर लुढ़क गया था कि न तो वह उसे अपनी चोंच से निकल सकता था और न ही पंजों से।

सो वह एक लकड़ी काटने वाले के पास गया और बोला —

---

[57] The Grain of Corn – A folktale from Punjab, India, Asia.
Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. 1894. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

आदमी आदमी पेड़ काट
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर लकड़ी काटने वाले ने पेड़ को काटने से मना कर दिया तो वह राजा के महल में उड़ कर गया और बोला —

राजा जी राजा जी उस आदमी को मारिये क्योंकि वह आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर राजा ने आदमी को मारने से मना कर दिया तो कौआ रानी जी के पास पहुँचा और बोला —

रानी जी रानी जी राजा जी को कोंचिये
क्योंकि राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर रानी ने राजा को कोंचने से मना कर दिया तो कौआ उड़ कर एक साँप के पास गया और साँप से बोला —

साँप साँप रानी जी को काट क्योंकि रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर साँप ने रानी को काटने से मना कर दिया तो कौआ उड़ता उड़ता एक डंडे के पास गया और उससे कहा —

डंडे डंडे तू साँप को मार
क्योंकि साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं

राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

अब कौआ उड़ा तो आग के पास पहुँचा और आग से बोला —

आग ओ आग तू डंडे को जला क्योंकि डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर आग ने डंडे को जलाने से मना कर दिया तो कौआ फिर उड़ता हुआ पानी के पास पहुँचा और पानी से बोला —

ओ पानी तू आग को बुझा दे
क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर पानी ने भी आग को बुझाने से इनकार कर दिया तो कौआ फिर उड़ा और एक बैल के पास गया और बैल से बोला —

बैल बैल आ चल कर पानी पी ले क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

सो बेचारा कौआ फिर उड़ा ओर एक रस्सी के पास पहुँचा और रस्सी से बोला —

चल रस्सी चल कर बैल को बाँध ले
क्योंकि बैल पानी नहीं पीता पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

यह सुन कर कौआ फिर उड़ा और अबकी बार एक चूहे के पास गया और उससे कहा —

ओ चूहे चल कर रस्सी काट क्योंकि रस्सी बैल को नहीं बाँधती
बैल पानी नहीं पीता पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

बिल्ले ने जैसे ही चूहे का नाम सुना तो वह तो उसके पीछे लग गया क्योंकि अगर बिल्ले ने चूहा नहीं खाया तब तो दुनियाँ ही खत्म हो जायेगी —

सो बिल्ले चूहा पकड़ने भागा बिल्ले के डर से चूहा रस्सी काटने भागा
चूहे के डर से रस्सी बैल को बाँधने भागी रस्सी के डर से बैल पानी पीने भागा
बैल के डर से पानी आग जलाने भागा पानी के डर से आग डंडा जलाने भागी
आग से जलने के डर से डंडा साँप को मारने भागा
डंडे के डर से साँप रानी को काटने भागा साँप से डर के रानी राजा को कोंचने भागी

रानी के कोंचने के डर से राजा आदमी को मारने भागा
राजा के मारने के डर से आदमी पेड़ काटने भागा

आदमी ने पेड़ काटा और किसान की पत्नी का मक्का का दाना ढूँढ कर दिया जिससे कौए की जान बची।

19 जिगर[58]

एक बुढ़िया को जिगर खाने की बहुत इच्छा हुई। उसने अपनी बेटी को कुछ पैसे दिये जिससे उसने उससे जिगर खरीद कर लाने के लिये कहा। उसने उससे कहा कि वह उसे तालाब में अच्छी तरह से धोये और फिर उसे सीधा घर ले कर आये।

लड़की शारशी[59] गयी वहाँ उसने जिगर खरीदा और उसे ले कर सीधी तालाब पर गयी और वहाँ उसे अच्छी तरह से धोया। जैसे ही उसने उसे पानी में से निकाला तो एक सारस उड़ता हुआ आया उसने नीचे कूद मारी जिगर लड़की के हाथ से छीना और उड़ गया।

लड़की बोली — "मेरा जिगर मुझे वापस दो ओ सारस ताकि मैं उसे अपनी माँ के पास ले जाऊँ वरना वह मुझे मारेगी।"

सारस बोला — "अगर तुम मुझे थोड़े से जौ ला कर दो तो मैं तुम्हारा जिगर तुम्हें वापस कर दूँगी।"

लड़की बेचारी एक किसान के पास गयी और उससे कहा — "ओ किसान मुझे थोड़ा जौ दो ताकि मैं उसे सारस को दे सकूँ ताकि वह मुझे मेरा जिगर लौटा सके। जिसे मैं अपनी माँ के पास ले जा सकूँ।"

---

[58] The Liver. A tale from Turkey.

[59] Tscharschi – means market

किसान बोला — "अगर तुम मेरे खेतों के लिये अल्लाह से बारिश की प्रार्थना करो मैं तुम्हें जौ दे दूँगा।"

यह लड़की को बहुत आसान लगा। जब वह अल्लाह की प्रार्थना कर रही थी — "ओ अल्लाह बारिश कर दो। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

तभी वहाँ एक आदमी आया जिसने कहा कि "बिना अगरबत्ती के अल्लाह तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार नहीं करेगा।"

सो वह लड़की अगरबत्ती की दूकान पर गयी और उससे कहा — "मुझे अगरबत्ती दो जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँ जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

दूकान वाला बोला — "मैं तुम्हें अगरबत्ती दे दूँगा अगर तुम मुझे जूता बनाने वाले से जूता ला कर दे दो।"

लड़की बेचारी जूता बनाने वाले के पास गयी और उससे कहा — "ओ जूता बनाने वाले। तुम मुझे जूता दो। यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को

दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

जूता बनाने वाला बोला — "पहले तुम मुझे बैल का चमड़ा ला कर दो तभी मैं तुम्हें जूता दे सकूँगा।"

सो वह लड़की खाल रंगने वाले के पास गयी और उससे कहा — "ओ खाल रंगने वाले मुझे बैल का चमड़ा दे दो। मैं यह चमड़ा जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा। यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी।

दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

खाल रंगने वाला बोला — "तुम मुझे बैल की खाल ला दो तो मैं तुम्हें बैल का चमड़ा दे दूँगा।"

सो लड़की एक बैल के पास गयी और उससे कहा — "मुझे बैल की खाल चाहिये। यह खाल मैं चमड़ा बनाने वाले को दूँगी। चमड़ा मैं जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा।

यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ

ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

बैल बोला — "अगर तुम मुझे भूसा ला कर दोगी तो मैं तुम्हें खाल दे दूँगा।"

अबकी बार लड़की एक मजदूर के पास गयी और उससे भूसा माँगा — "मुझे थोड़ा सा भूसा दो। मैं इसे ले जा कर बैल को खिलाऊँगी। बैल मुझे अपनी खाल देगा। यह खाल मैं चमड़ा बनाने वाले को दूँगी। चमड़ा मैं जूता बनाने वाले को दूँगी। जूता बनाने वाला मुझे जूता बना कर देगा।

यह जूता ले जा कर मैं दूकानदार को दूँगी। दूकानदार मुझे अगरबत्ती देगा जिसे जला कर मैं अल्लाह से प्रार्थना कर सकूँगी जो किसान के लिये बारिश करेगा। इससे किसान मुझे जौ देगा। मैं जौ ले जा कर सारस को दूँगी। सारस मुझे मेरा जिगर वापस करेगा जिसे ले जा कर मैं अपनी माँ को दूँगी।"

मजदूर बोला — "मैं तुम्हें बहुत सारा भूसा दूँगा अगर तम मुझे एक चुम्बन दोगी।"

लड़की ने देखा कि बिना उसे चुम्बन दिये वह सारस से जिगर वापस नहीं ले सकती सो उसने उसे चूम लिया। मजदूर ने भी उसे बहुत सारा भूसा दिया।

भूसा ले कर वह बैल के पास गयी जिसने उसे खाल दी
खाल ले कर वह चमड़ा बनाने वाले के पास गयी जिसने उसे चमड़ा दिया
चमड़ा उसने जूता बनाने वाले को दिया जिसने उसे जूता दिया

जूता उसने दूकानदार को दिया जिसने उसे अगरबत्ती दी
अगरबत्ती जला कर उसने प्रार्थना की जिससे अल्लाह ने किसान के लिये बारिश की
किसान ने उसे जौ दिये जिन्हें उसने ले जा कर सारस को दिये
सारस ने उसे उसका जिगर वापस किया
तब कहीं जा कर वह अपना जिगर ले कर अपनी मॉ के पास गयी

मॉ ने उसे पकाया तब दोनों ने मिल कर उसे खाया।

20 बात[60]

बिल्ले और चुहिया जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली है।

यह कहानी इस पुस्तक में दी हुई दूसरी कहानियों जैसी कहानी तो नहीं है पर फिर भी बहुत कुछ वैसी ही है। हमें आशा है कि तुम्हें यह कहानी भी उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी इस पुस्तक की और दूसरी कहानियाँ।

एक बार की बात है कि गिनी की खाड़ी के ऊपर अकरा शहर[61] के पास के एक गाँव में एक आदमी रहता था।

एक दिन वह अपने बागीचे में याम[62] तोड़ने गया। वह उस याम को बाजार में बेचने के लिये ले जाना चाहता था।

जब वह याम खोद रहा था तो एक याम ने उससे कहा — "तो आखिर तुम यहाँ आ ही गये। तुमने मेरी कभी घास तो निकाली नहीं और आज तुम मुझे अपनी डंडी से खोदने के लिये आ गये। जाओ और मुझे यहीं छोड़ दो।"

---

[60] Talk – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the Book : "The Cow-Tail Swich and Other West African Stories". By Harold Courlander George Herzog. 1947. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[61] Accra is the capital of Ghana, West Africa

[62] Yam is a tuber vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is a staple diet in Western African countries. See its picture above.

किसान मुड़ा और मुड़ कर आश्चर्य से अपनी गाय की तरफ देखा। गाय अपना खाना खा रही थी और उसकी तरफ देख रही थी।

किसान ने उससे पूछा — "क्या तुमने मुझसे कुछ कहा?"

गाय चरती रही। वह कुछ नहीं बोली।

पर उस आदमी का कुत्ता बोल पड़ा — "वह गाय नहीं थी जो तुमसे बोली थी। वह तो याम था जो तुमसे बोला था। उसने तुमसे कहा था कि तुम उसको वहीं छोड़ दो।"

यह सुन कर तो वह आदमी और भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसका कुत्ता पहले तो कभी नहीं बोला था आज उसको क्या हो गया था। और फिर उसको उसके बोलने का ढंग भी कुछ अच्छा नहीं लगा।

उसने अपना चाकू लिया और अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम के पेड़ की एक शाख काटी तो वह पाम का पेड़ बोला — "इस शाख को नीचे रख दो।"

जब उसने यह सुना तो वह फिर बहुत परेशान हुआ क्योंकि आज तो उसके साथ ये सब घटनाऐं बड़ी अजीब सी हो रही थीं।

पाम के पेड़ की बात सुन कर उस किसान ने वह पाम की शाख फेंकनी चाही तो पाम की शाख बोली — "ओ किसान, ज़रा धीरे से।"

सो उसने वह शाख धीरे से एक पत्थर पर रख दी। तो पत्थर बोला — "ए किसान, यह शाख तुमने मेरे ऊपर क्यों रखी? उठाओ इसे मेरे ऊपर से।"

किसान के लिये बस इतना काफी था। वह वहाँ से उठा और अपने गाँव की तरफ भाग लिया।

रास्ते में उसको एक मछियारा मिल गया। उसने किसान को जब इस तरह भागते देखा तो उससे पूछा — "अरे क्या हो गया है तुमको? तुम इतनी जल्दी में क्यों हो?"

वह किसान बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

मछियारा अपना मछली पकड़ने वाला जाल ले कर जा रहा था। वह बोला — "बस इतनी सी बात? इसी ज़रा सी बात ने तुमको इतना डरा दिया?"

मछियारे का जाल बोला — "क्या इसने उस पाम की शाख को फिर वहाँ से हटाया?"

मछियारा बोला — "वाह तुम भी बोले।"

पर यह सुन कर उसको भी आश्चर्य हुआ कि उसका जाल बोला। उसने भी अपना मछली पकड़ने वाला जाल नीचे जमीन पर फेंका और किसान के साथ साथ वह भी भाग लिया।

रास्ते में उनको एक कपड़ा बुनने वाला मिल गया। उसके सिर पर कपड़ों की एक गठरी रखी थी।

किसान और मछियारे को भागता देख कर उसने उनसे पूछा — "तुम लोग इतनी जल्दी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?"

किसान बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में लेकर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को फिर वहाँ से हटाया?"

कपड़ा बुनने वाला बोला — "पर इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? यह तो कोई बात न हुई।"

तभी उसकी कपड़ों की गठरी बोली — "ओह, परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

कपड़ा बुनने वाला चिल्लाया — "अरे तुम भी।"

उसने भी अपनी कपड़े की गठरी सड़क से दूर फेंकी और वह भी किसान और मछियारे के साथ साथ भाग लिया।

भागते भागते वे तीनों एक नदी के किनारे आये तो वहाँ उनको एक आदमी नहाता हुआ मिल गया। उसने उनको इस तरह भागते हुए देखा तो उनसे पूछा — "क्या तुम लोग किसी हिरन का पीछा कर रहे हो?"

किसान हाँफते हुए बोला — "आज मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को फिर वहाँ से हटाया?"

उसके बाद कपड़ा बुनने वाला बोला — "और मेरी कपड़े की गठरी भी बोली "ओह परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

नदी में नहाता हुआ आदमी बोला — "अरे क्या तुम सब लोग केवल इसी लिये भाग रहे हो? तुम सब लोग पागल हो गये हो।"

नदी बोली — "तो क्या तुम नहीं भागते अगर तुम्हारे साथ ऐसा हुआ होता तो?"

यह सुन कर वह नहाता हुआ आदमी भी नदी में से कूद कर बाहर आ गया और उन तीनों के साथ साथ भागने लगा।

भागते भागते वे एक बड़ी सड़क पर आ गये। वह सड़क गाँव के सरदार के घर की तरफ जाती थी सो वे सब सरदार के घर आये। सरदार के नौकरों ने अन्दर से एक स्टूल ला दिया तो सरदार उनकी शिकायतें सुनने के लिये उस स्टूल पर बैठ गया।

सबसे पहले आदमी ने कहना शुरू किया — "आज मैं अपने खेत से याम उखाड़ने गया तो मेरे आस पास की सब चीज़ों ने बोलना शुरू कर दिया।

मेरा याम बोला "मुझे छोड़ दो।" उसके बाद मेरा कुत्ता बोला "तुमको याम की बात सुननी चाहिये।" जब मैं अपने कुत्ते को मारने के लिये पाम की एक शाख हाथ में ले कर दौड़ा तो पाम का पेड़ बोला "यह शाख नीचे रख दो।"

जब मैंने पाम के पेड़ की शाख एक पत्थर पर रखी तो पाम की शाख बोली "ज़रा धीरे से।" और पत्थर बोला "इसको मेरे ऊपर से हटाओ।"

उसके बाद मछियारा बोला — "उसके बाद मेरा मछली पकड़ने वाला जाल बोला "क्या इसने उस पाम की शाख को फिर वहाँ से हटाया?"

उसके बाद कपड़ा बुनने वाला बोला — "और मेरी कपड़े की गठरी भी बोली "ओह परेशान होने की बात तो है। अगर ऐसा तुम्हारे साथ होता तो तुम भी ऐसे ही भागते।"

नदी में नहाता हुआ आदमी भी अपनी फटी हुई आवाज में बोला — "मैं नदी में नहा रहा था तो मेरी नदी भी बोली "तो क्या तुम नहीं भागते अगर तुम्हारे साथ ऐसा हुआ होता तो?"

सरदार ने उन सबकी बात आराम से सुनी पर वह भी कुछ गुस्सा हुए बिना न रह सका। वह कुछ गुस्से से बोला — "यह कहानी तो बहुत ही अजीब है। ऐसा करो तुम लोग सब अपने अपने काम पर जाओ और मुझे चैन से रहने दो वरना मैं तुम सबको सजा दूँगा।"

यह सुन कर वे सब चले गये। सरदार ने भी अपना सिर हिलाया और अपने आपसे बोला — "यह सब बेकार की बातें लोगों को परेशान तो करती ही हैं।"

कि तभी उसका स्टूल बोला — “बहुत बढ़िया। ज़रा सोचो तो एक बात करता हुआ याम, कुत्ता, पाम की शाख, पत्थर, मछली पकड़ने वाला जाल, कपड़े की गठरी, नदी।”

यह सुन कर तो सरदार भी उस स्टूल पर से उठ कर खड़ा हो गया और अपने घर के अन्दर भाग गया।

21 बबून का फैसला[63]

एक दिन की बात है कि कुछ ऐसा हुआ कि —

एक बार एक चूहे ने एक दर्जी के कपड़े फाड़ डाले तो दर्जी एक बबून के पास गया और उससे बोला — "मैं तेरे पास इसलिये आया हूँ क्योंकि चूहे ने मेरे कपड़े फाड़ दिये हैं। पर वह कहता है कि उसको यह बात मालूम नहीं है और वह बिल्ली को इसका दोषी ठहराता है।

इसी तरह से बिल्ली भी अपने आपको निर्दोष ठहराती है और कहती है कि यह काम कुत्ते ने किया होगा। कुत्ता कहता है कि यह उसका काम नहीं है लकड़ी ने यह काम किया होगा।

लकड़ी आग को दोषी ठहराती है। आग का कहना है कि यह काम उसने नहीं किया बल्कि पानी ने किया होगा। पानी का कहना कि यह काम हाथी ने किया होगा और हाथी कहता है कि यह काम चींटी का है।

इस तरह उन सबमें आपस में झगड़ा हो रहा है। मैं दर्जी तुझसे यह कहने आया हूँ कि तू उन सबको इकट्ठा कर और पता लगा कि यह काम किसका है ताकि मुझे सन्तोष मिल सके।"

---

[63] The Judgment of Baboon – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft34.htm

जब दर्जी ने यह सब बबून से कहा तो उसने सब जानवरों को इकट्ठा किया तो उन्होंने उससे भी वही सब कहा जो उन्होंने दर्जी से कहा था। हर जानवर एक दूसरे को दोषी बता रहा था।

सो बबून को उनको सजा देने का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखायी दिया सिवाय इसके कि वे आपस में एक दूसरे को ही सजा दे दें।

सो उसने सबसे पहले चूहे से कहा — "चूहे दर्जी को सन्तोष दो।"

चूहे ने कहा कि उसकी कोई गलती नहीं है फिर भी बबून ने बिल्ली से कहा कि वह चूहे को काट ले। बिल्ली ने चूहे को काट लिया।

फिर उसने वही सवाल बिल्ली से पूछा और जब उसने कहा कि यह काम उसका नहीं था तो बबून ने कुत्ते को बुला कर कहा कि वह बिल्ली को काट ले।

इस तरह से बबून ने सभी जानवरों को बुलाया और एक के बाद एक सभी से वही सवाल किया पर सभी ने यही कहा कि वे नहीं जानते कि यह किसने किया था। तब उसने उन सबसे कहा —

लकड़ी तुम कुत्ते को मारो
आग तुम लकड़ी को जलाओ
पानी तुम आग को बुझाओ
हाथी तुम पानी पियो
चींटी तुम हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटो

उन्होंने सबने ऐसा ही किया और उस दिन के बाद से वे कभी एक दूसरे के साथ मिल कर नहीं बैठते।

चींटी हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटती है
हाथी पानी पी जाता है
पानी आग बुझा देती है
आग लकड़ी खा जाती है
लकड़ी कुत्ते को मारती है
कुत्ता बिल्ली को काटता है
बिल्ली चूहा खाती है

इस फैसले से दर्जी को बहुत सन्तोष मिला और वह बबून से बोला — "बबून अब मैं सन्तुष्ट हूँ। और अब क्योंकि मुझे सन्तोष मिल गया है इसके लिये मैं तुझे दिल से धन्यवाद देता हूँ। तूने मेरे साथ न्याय किया है तूने मुझे नया कपड़ा दिया है।"

बबून बोला — "आज से मेरा नाम जैन[64] नहीं होगा मेरा नाम बबून होगा।"

उस दिन से बबून अपने चारों हाथों पैरों पर चलता है शायद इसलिये कि उसने उस दिन अपना यह बेवकूफी भरा फैसला सुनाया था तो उसका दो पैरों पर चलने का फायदा उससे छीन लिया गया।

[64] Jan

List of Stories of “Like Cat and Rat Tales”

1. The Cat and the Mouse
2. The Judgment of Baboon
3. The Old Woman and Her Pig
4. Moonachar and Manachar
5. Moorachug and Meenachug
6. The Cock and the Mouse
7. The Noseless Bird
8. Saxton's Nose
9. The Wife and Her Bush of Berries
10. Nanny Who Wouldn't Go for Supper
11. Pitidda
12. The Goso the Teacher
13. Why the Monkey Still Has a Tail
14. How the Rabbit Lost His Tail
15. The Grasshopper and the Ant
16. The Sparrow and the Bush
17. The Sparrow and the Crow
18. The Grain of Corn
19. The Liver
20. Talk
21. The Judgment of Baboon

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022